अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

❑ मूल्य : 5.00
❑ अंक : 02
❑ 1-15 सितंबर, 2013
❑ वर्ष : 37

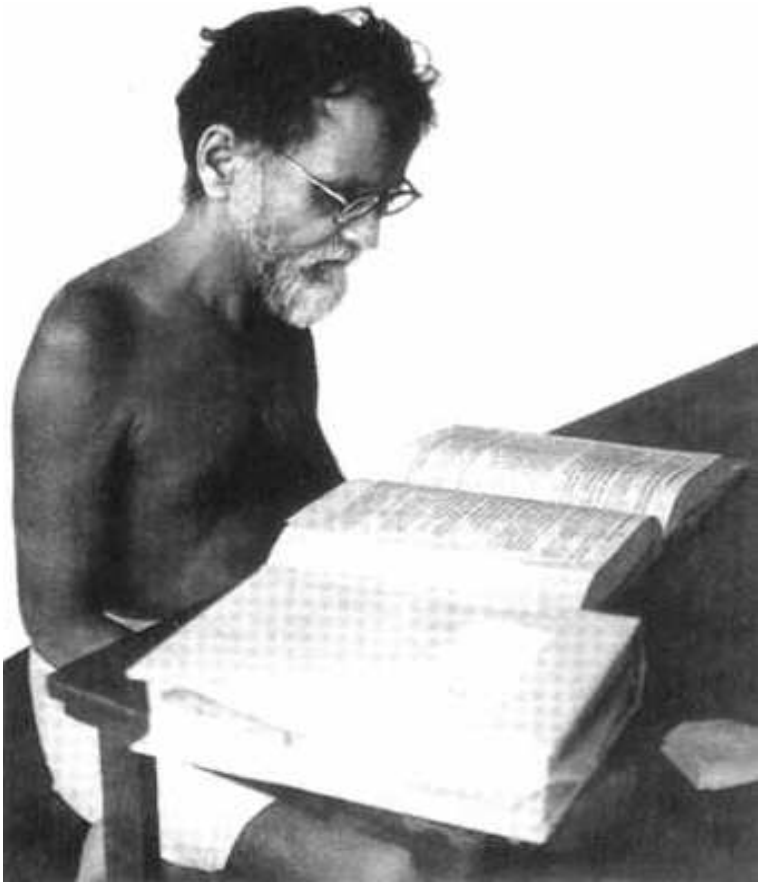

नैतिक शिक्षा : वैज्ञानिक आधार

वैज्ञानिक जमाने के लड़के हमसे पूछेंगे कि हम माता-पिता की सेवा करना कबूल करते हैं, पर मान लीजिए कि माता-पिता हमसे कोई गलत काम करने को कहें तो क्या हमको वह बात माननी चाहिए? इसका जवाब यही हो सकता है कि स्वतंत्र बुद्धि आने के बाद माता-पिता की आज्ञा मानने की जिम्मेदारी बच्चों पर नहीं है, लेकिन सेवा करने की जरूरत है। सेवा करने की जिम्मेदारी होने से आज्ञा मानने का धर्म पक्का हो गया।

(1956 के प्रवचनों से)

–विनोबा

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत

वर्ष : 37, अंक : 02
1-15 सितंबर, 2013

सर्व सेवा संघ
द्वारा प्रकाशित
अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

संपादक
बिमल कुमार
मो. 9235772595

प्रसार व्यवस्थापक
उमेश कुमार

मूल्य : पांच रुपये

शुल्क
वार्षिक : 100 रुपये
आजीवन : 1,000 रुपये

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ-प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-221 001 (उ.प्र.)
फोन व फैक्स : 0542-2440385,
2440223, मो. 9453047097
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
sarvodayavns@yahoo.co.in

विज्ञापन दर
पूरा पृष्ठ : 2000 रुपये
आधा पृष्ठ : 1000 रुपये
चौथाई पृष्ठ : 500 रुपये

अंदर के पृष्ठों पर...

1. अण्णा आंदोलन एवं... 2
2. विनोबा की विरासत... 3
3. एकांतसेवी से परिव्राजक... 4
4. जरूरत है 'सत्याग्रही'... 7
5. एक यथार्थ संत की... 11
6. पर्यावरण की कीमत पर... 13
7. रावण सुनाए रामायण... 15
7. सवाल गरीबी से ज्यादा... 17
8. शांति-यज्ञ... 20

अण्णा आंदोलन एवं सर्व सेवा संघ : एक स्पष्टीकरण

वाराणसी में एक अच्छे मिशन को लेकर चल रहे भ्रष्टाचार विरोधी अभियान के संदर्भ में पिछले महीने जो विवाद खड़ा हुआ है और उसमें अकारण ही सर्व सेवा संघ का नाम घसीटा गया है। यह शर्मनाक है।

सर्व सेवा संघ (अ. भा. सर्वोदय मंडल) द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में अध्यक्ष सुश्री राधा भट्ट ने कहा है कि सामाजिक जीवन में सेवा-कार्य हो अथवा व्यवस्था-परिवर्तन की क्रांतिकारी मुहिम, इसमें जिस निर्लिप्तता व निर्द्वन्द्व समर्पण की जरूरत होती है, उसके अभाव में ही ऐसे अनधिकार कदम उठाये जाते हैं और विवाद उत्पन्न होते हैं। जैसा वाराणसी में भ्रष्टाचार विरोधी अभियान से जुड़े कुछेक साथियों द्वारा उत्पन्न किये गये हैं, जिससे अभियान को लाभ के बदले हानि ही उठानी पड़ी है और साथ ही सर्व सेवा संघ जैसे निष्पक्ष व स्वच्छ संगठन को भी अकारण ही अपयश का भाजन बनाया गया है।

सर्व सेवा संघ आदरणीय अण्णा हजारे के भ्रष्टाचार उन्मूलन मिशन का प्रारम्भ से ही प्रशंसक रहा है, परंतु आंदोलन के आधारभूत तत्त्वों के लिए अपने कुछ प्रश्न भी उठाता रहा है। वह मानता है कि भ्रष्टाचार के जड़मूल से उन्मूलन के लिए व्यवस्था-परिवर्तन आवश्यक है किन्तु केवल एकाध बिल पास करने से यह पूर्णतः नहीं होगा। उसके लिए व्यक्तिगत और सामूहिक संकल्प खड़ा करना होगा। परंतु बिल पास हो, इसमें कोई दो राय नहीं, क्योंकि इससे फिलहाल कम-से-कम भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक माहौल तो बनेगा। सर्व सेवा संघ का उद्देश्य है कि केवल कुछ कानून ही नहीं, सत्ता का पूरा ताना-बाना यानी उसकी बैठक ही बदलनी होगी, ताकि लोकतंत्र का पूरा चेहरा ही बदला जाये। सत्ता का केन्द्र जन-समाज के बीच हो न कि विभिन्न पक्ष द्वारा निर्णीत कुछ तथाकथित जन प्रतिनिधियों के हाथों में।

वर्तमान में सिद्धांतविहीन और मात्र सत्तालोलुप रह गये सभी पक्षों ने अपनी प्रतिष्ठा खो दी है, यह हम सभी देख रहे हैं। अतः समाज के संचालन की बागडोर स्वयं ग्रासरूट जनता के हाथों में हो। यही था गांधीजी का स्वराज्य, समाज द्वारा संचालित अहिंसक-राज्य व शोषणमुक्त समाज-व्यवस्था। इसे डायरेक्ट डेमॉक्रेसी भी कह सकते हैं।

अतः सर्व सेवा संघ इस स्वराज्य के विचार व प्रक्रिया को भ्रष्टाचार विरोधी अभियान को जब-जब उन्होंने चाहा, बताता रहा है, इसे उनके कार्यकर्ताओं को समझाता रहा है। पर एक संगठन के रूप में वह कभी भी भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन का अंग नहीं बना है।

सर्व सेवा संघ मानता रहा है कि वह किसी भी अभियान में तभी जुड़ेगा जब उनके वैचारिक आधारबिन्दु एक होंगे, उनके आंदोलन की समस्त प्रक्रिया, भाषा तथा भावना पूर्ण अहिंसक और गांधीनिष्ठा की दृष्टि से सत्याग्रही होगी और इसमें देश की पूरी गांधी बिरादरी सामने वाले आंदोलन के साथ विमर्श करके एकमत, एकरस और एकदिल होगी। अभी तक उस विमर्श का अवसर बना नहीं है; शायद अभी सर्व सेवा संघ की वैसी तीव्र आवश्यकता भ्रष्टाचार विरोधी अभियान को भी पड़ी नहीं है। सर्व सेवा संघ के वाराणसी परिसर में अण्णा आंदोलन का कोई कार्यालय नहीं है और न ही सर्व सेवा संघ इस आंदोलन के नाम पर किये जा रहे किसी भी धन-संग्रह में शामिल है। कुछ लोगों द्वारा धन-संचय कार्य के लिए संस्था के नाम का उपयोग करना दुर्भाग्यपूर्ण, अवैधानिक व अनैतिक कृत्य रहा। इससे सर्व सेवा संघ की छवि को बड़ा धक्का लगा है। जिन व्यक्तियों ने इसे अंजाम दिया है उन्हें अपने इस कुप्रयास के लिए सार्वजनिक रूप से क्षमा मांगनी चाहिए।

देश के बाहर होने के कारण मैं, सर्व सेवा संघ की अध्यक्ष होने के नाते यह स्पष्टीकरण इसके पूर्व नहीं कर पायी। अब स्वदेश लौटने पर सर्वप्रथम अपने इस कर्तव्य की पूर्ति कर रही हूं।

समस्त जन समाज समझे कि सर्व सेवा संघ श्री अण्णा हजारेजी के भ्रष्टाचार निर्मूलन आंदोलन को देश की स्वतंत्रता के लिए आवश्यक समझता है। अण्णा हजारे, उनकी टीम व कार्यकर्ताओं के लक्ष्य की मैं प्रशंसा करती हूं। परंतु किसी न्यूनतम अंश में भी सर्व सेवा संघ उनके अभियान के संगठन संबंधी, धन एकत्र करने की प्रक्रिया संबंधी तथा प्रचार आदि संबंधी किसी भी गतिविधि में संलग्न नहीं है।

यश लिप्सा में निमग्न कुछ लोगों के अमर्यादित व्यवहार के लिए सर्व सेवा संघ जिम्मेवार नहीं है, क्योंकि वे अपने इसी प्रकार के कृत्यों के कारण पहले ही संघ की जिम्मेवारियों से मुक्त कर दिये गये हैं। सर्व सेवा संघ इस प्रकार की अवैधानिक, अनुशासनहीन कार्यशैली को भी हिंसा का ही एक रूप मानता है। **–मारोती गावंडे,**
कार्यालय मंत्री, सर्व सेवा संघ

संपादकीय

विनोबा की विरासत

गांधीजी की मृत्यु के बाद, पूंजीवाद के विकल्प एवं नयी सभ्यता के निर्माण का काम रुक गया होता। लेकिन विनोबा ने इस विचार को जीवित रखा। न केवल जीवित रखा, बल्कि आगे के रास्ते का भी निर्माण किया। इसी कारण, विनोबा न केवल गांधी के सच्चे उत्तराधिकारी थे, उन्होंने विश्व को नये विचारों से भी रूबरू कराया।

एक तात्कालिक समस्या से उन्होंने एक जागतिक विकल्प भी प्रस्तुत किया। भू-दान तो एक निमित्त मात्र था। भूमि-समस्या सुलझाने के कई प्रयोग हो रहे थे, भूदान का प्रयोग उनमें सबसे अभिनव प्रयोग था। भू-दान सूत्र से आगे बढ़कर, विश्व को एक अभूतपूर्व विचार दिया। वह विचार था ग्राम स्वराज्य का विचार।

ग्राम स्वराज्य के विचार ने सत्ता के बारे में सारे पुराने विचारों को न केवल नकार दिया, बल्कि यह भी स्थापित किया कि सच्चे लोकतंत्र में सत्ता का अधिष्ठान कहां होगा। उन्होंने राजसत्ता के विकल्प में लोकसत्ता के विचार को व्यवहारिक बनाने के प्रयोग किये। लोकसत्ता की स्थापना, राजसत्ता की छत्रछाया में नहीं होगी, वह राजसत्ता पोषित भी नहीं होगी तथा यहां तक कि उसके पूरक के रूप में भी नहीं होगी। विनोबा ने यह स्थापित किया कि लोकसत्ता, राजसत्ता के विकल्प के रूप में विकसित करना है। उन्होंने कहा था कि ''आखिर में स्टेट नहीं रहेगी और आज से ही उसे क्षीण होना आरम्भ होना चाहिए।''

वे इस संदर्भ में बिलकुल स्पष्ट थे कि यदि राज्य का विसर्जन होना है तो राज्य जिस शक्ति एवं संगठन के बल पर खड़ा है (अर्थात् हिंसा बल एवं सैन्य शक्ति) उसका विसर्जन भी आज से ही शुरू करना होगा, उसका विकल्प आज से ही खड़ा करना होगा।

इसी कारण उन्होंने क्रांति के वाहक एवं माध्यम के निर्माण में भी एक बड़ी क्रांति के कार्य को आगे बढ़ाया। अर्थात् अहिंसा एवं सत्याग्रह को निरंतर परिष्कृत करते रहने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ''हम निर्वैर भी रहेंगे और प्रतिकार भी करेंगे।...निर्वैरता से प्रतिकार की शक्ति बढ़ गयी। और प्रतिकार से निर्वैरता की शक्ति बढ़ी।'' नयी सभ्यता के निर्माण का यह मूल मंत्र था। इस निर्वैरता एवं प्रतिकार की मिश्रित शक्ति से उन्होंने ग्राम स्वराज्य लाने की बात कही। उन्होंने आह्वान किया कि ''उठ जाओ, खड़े होओ और कसम खाओ कि जो कच्चा माल हमारे यहां होता है उसका पक्का माल हम ही बनायेंगे। और वे चीजें शहर से नहीं लेंगे। जैसे मुसलमान सूअर का गोश्त नहीं खाते, चाहे वह सस्ता मिले, और हिन्दू गाय का गोश्त नहीं खाते, चाहे वह सस्ता मिले। वैसे ही गांव को चाहिए कि जो माल गांव में बन सकता है, वह शहर में बना हुआ न खरीदें।''

क्रांति के वाहक एवं माध्यम के निर्माण में तंत्र-मुक्ति एवं निधि-मुक्ति की बात कहकर उन्होंने क्रांतिकारी संगठन की मर्यादा भी सुनिश्चित की। राजसत्ता केवल हिंसाबल एवं सैन्य शक्ति आधारित ही नहीं होती, इसका तंत्र श्रेणीबद्धता आधारित होता है। यदि क्रांतिकारी संगठन भी श्रेणीबद्ध संगठन होगा तथा इसके शीर्ष पर बैठे लोगों के निर्णय, नीचे के कैडर को मानने होंगे, तो क्रांति के बाद जो समाज बनेगा वह भी श्रेणीबद्ध बना रहेगा। इसके शीर्ष पर बैठे लोगों का निर्णय समाज के लोगों को मानना होगा। इससे समतामूलक समाज की ओर हम नहीं बढ़ पायेंगे। तंत्र-मुक्ति का अर्थ है कि जब अहिंसक संगठन लोक के बीच कार्य करे, तो वह लोक संगठन व लोक सत्ता का ही हिस्सा रहे। वहां कोई अलग, अन्य संगठन न रहे। लोक संगठन भी हो तथा क्रांतिकारियों का भी कोई संगठन वहां हो, ऐसा नहीं होना चाहिए। क्रांतिकारी संगठन को स्वयं को लोकसत्ता में विलीन न कर देना होगा। इस प्रकार क्रांतिकारी की भूमिका, अहिंसक-नैतिक लोकसत्ता के अधिष्ठान को मजबूती प्रदान करने की होगी।

इसी प्रकार निधि-मुक्ति का अर्थ है कि क्रांतिकारी तथा क्रांति कार्य दोनों पूर्णतः लोकसत्ता एवं लोक संग्रह पोषित हों। क्रांतिकारियों के योगक्षेम की तथा क्रांति कार्य को आगे बढ़ाने की व्यवस्था समाज स्वयं उठाने लगे, तभी हम लोकसत्ता निर्माण के काम में आगे बढ़ सकेंगे। व्यक्तिगत सम्पत्ति के विसर्जन के काम में जो क्रांतिकारी संगठन लगे हैं, उन्हें स्वयं भी सम्पत्ति एवं निधि से मुक्त होना होगा। लोक की ही सम्पत्ति तथा लोक की ही निधि— इस विचार के आधार पर ही आगे बढ़ना होगा। और लोक भी सारी सम्पत्ति एवं निधि का ट्रस्टी मात्र हो, उसका मालिक नहीं। तो निधि-मुक्ति का प्रयोग केवल क्रांतिकारी को मर्यादा में रखने के लिए नहीं बल्कि नये समाज के निर्माण के लिए भी आवश्यक शर्त बन गयी।

इस प्राकार हम पाते हैं कि केन्द्रीकृत ढांचों को गिराने के लिए न तो केन्द्रीकृत संगठन की जरूरत है, न केन्द्रीय निधि की। विनोबा ने जो बात हमें सिखाई, वह यही कि लोक-स्तर पर केन्द्रीकृत ढांचे से भिन्न सत्ता एवं निधि के निर्माण से ही नयी क्रांति आयेगी। इसके लिए रचना और असहकार दोनों की शक्ति विकसित करनी होगी।

लेकिन विनोबाजी बार-बार इस बात पर भी जोर देते रहे कि रचना एवं असहकार दोनों के पीछे मुख्य शक्ति प्रेम की ही होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि ''सत्याग्रह प्रेम की प्रक्रिया है। इसलिए जिनके सामने सत्याग्रह किया जायेगा वे हमारा उपकार मानेंगे।....हमें तो अन्तरात्मा को जगाना है।....अगर सामने वाला धमकी समझे तो इसका मतलब हुआ कि यह सच्चा सत्याग्रह नहीं है।'' विनोबा ने गांधी के विचार को आगे बढ़ाया, नये-नये आयाम दिये। आज की परिस्थिति में हमें गांधी-विनोबा-जयप्रकाश की विरासत को आगे बढ़ाना होगा।

बिमल कुमार

एकांतसेवी से परिव्राजक

❑ विनोबा

आजकल बहुत जनसम्पर्क में मैं आ रहा हूं और गांव-गांव घूमता हूं तो हजारों लोगों से बातचीत होती है, मुलाकातें होती हैं। इस तरह का जीवन है। यह जीवन मेरे लिए रुचिकर नहीं है। मेरी अपनी रुचि, ध्यान, चिन्तन, मनन में है। उसके साथ-साथ ग्रामीण जनता की सेवा का काम और विद्यार्थियों में ज्ञान-प्रचार का काम सहज-भाव से हो सकता है। चिन्तन, मनन, ध्यान के साथ यह करने की भी मेरी रुचि है। और इस तरह से गांधीजी के रहते जवानी के बत्तीस साल मैंने बिताये हैं। अब मैं निकल पड़ा हूं, प्रचार के लिए। पर जिसे प्रचारक कहते हैं, वह वृत्ति मेरे खून में नहीं है। अगर वह वृत्ति होती तो अपनी जवानी एकांत उपासना में बिताने की बुद्धि मुझे नहीं होती। जवानी में ही निकल पड़ता। निरंतर भ्रमण करना, रोज नये-नये गांवों में जाना, यह जवानी के लिए ज्यादा अनुकूल है, वृद्धावस्था के लिए नहीं पर जब तक गांधीजी थे तब तक मैं अपनी जिन्दगी उस एकान्त उपासना में, विचार के अध्ययन और ग्रामीणों की सेवा में बिताता रहा। गांधीजी की मृत्यु के दो साल पहले से मैंने काम उठा लिया था, एक गांव का भंगी बनकर सेवा करने का। वह काम मेरा परमेश्वर की कृपा से पौने दो साल तक सतत जारी रहा। ठण्ड में, बारिश में, धूप में, तीन मील पैदल जाना और तीन मील पैदल आना और वहां एक-डेढ़ घंटा उस काम में बिताना। सूर्य नारायण को नियमितता में मैंने आदर्श माना था इसलिए उस तरह मेरा यह काम चलता था। पर गांधीजी के जाने के बाद साथियों को महसूस हुआ और मुझे भी बात जंची कि अब मुझे परिव्राजक होना चाहिए। आज परिव्राजक वृत्ति से घूम रहा हूं, उन दिनों एकांत निवास था। पर उसमें जिस शांति का अनुभव आता था और जैसा वह जीवन मुझे अत्यन्त प्रिय था उसी का अनुभव आज आता है और प्रयत्न मेरा रहता है कि सतत यह काम मैं करता रहूं। अगर हो सके तो किसी दिन नागा न हो।

जब आश्रम छोड़कर प्रथम निकल पड़ा तो हिन्दुस्तान के मुखतलिफ प्रदेशों में मोटर-ट्रेन से घूमना हुआ। विशेषकर शरणार्थी भाई और मेवात के लोगों की कुछ सेवा करने का मौका मिला। रेलवे-मोटर के परिभ्रमण में मैं सोचता रहा कि अगर अहिंसा की शक्ति का भान करना हो और अहिंसा से सामाजिक जिन्दगी के महत्त्व के मसले, जिनके तत्काल हल होने की बहुत जरूरत है (ऐसे तीव्र मसले भी) फौरन हल हो सकते हैं। इसका दर्शन करना हो और कराना हो तो हमें जनता के हृदय तक पहुंचना चाहिए। इसलिए पैदल-यात्रा के लिए निकल पड़ूं तो काम बनेगा। पैदल-यात्रा में आसमान के नीचे रहने का मौका मिलता है, सृष्टि से एकरूप होने का मौका मिलता है, चिन्तन करने का मौका मिलता है और विचार की गहराई में जाने का मौका मिलता है। हिन्दुस्तान का हृदय देहात है। देहात से संबंध होता है और आत्मा में गहराई से पैठ भी सकते हैं। इसलिए मैंने पैदल-यात्रा शुरू की। जो सर्वोदय-सम्मेलन हैदराबाद के नजदीक शिवरामपल्ली में हुआ, उसका काम पूरा कर मैं तेलंगना गया। वहां एक दर्शन हुआ। वह पहला अवसर था। भूमिहीनों ने मांग की और दान मिला और सहज भाव से मिला। न वैसी कोई योजना थी और न खयाल था। उस रात को मुझे दो-चार घंटे नींद नहीं आयी। सोचने लगा यह क्या घटना घटी। हरिजनों ने जमीन मांगी, उस मांग को गांव के लोगों के सामने रखा। एक शख्श ने वह मांग पूरी की। यह क्या है? चिन्तन करता रहा और अंदर से यह चक्र चलता था विचार का, कि क्या इस काम को उठा लूं और इस तरह मांगता फिरूं? क्या इससे भूमि का मसला हल होगा? इसमें दूसरों की सलाह लेने की बात ही नहीं थी। दूसरा अत्यन्त निकट का मित्र भी शायद ही सलाह देता कि तुम निकल पड़ो। मांगने से भू-समस्या हल हो सकती है? मेरे मन में ही झिझक हो रही थी और मैं सोच रहा था, भूमि के मसले के लिए कम-से-कम पांच करोड़ एकड़ की जरूरत है। यह मेरा गणित था। इतिहास में मंदिर, मसजिद, मठों के लिए जमीन मांगी गयी और लोगों द्वारा दी भी गयी पर इतने व्यापक परिमाण में मिलेगी, यह मानना बहुत मुश्किल था। इसलिए मेरे मन में झिझक थी। पर वहां भूमि का मसला खड़ा था। उसके लिए खून-खराबियां हो चुकी थीं। लोगों में तीव्रता बढ़ी थी। लोग पीड़ित थे, भूखे थे। एक जीवित समस्या सामने थी। अंदर से आवाज आयी हिम्मत नहीं करेगा तो अहिंसा में तेरी निष्ठा की कोई कीमत नहीं। मानो इस मसले के लिए अहिंसा को बेकार समझकर हिंसा का भी उपयोग करने की हिम्मत मुझे करनी चाहिए या विश्वासपूर्वक इस काम को उठा लेना चाहिए, नहीं तो कायरता होगी। मैंने बिना किसी शंका के परमेश्वर का स्मरण कर उसी की प्रेरणा मानकर उसी की आज्ञा समझकर इस काम को उठा लिया। अंदर से जो आवाज सुनाई दी, वह यह थी कि जो परमेश्वर तुझे मांगने की प्रेरणा दे रहा है वही दूसरों को देने की प्रेरणा देगा। परमेश्वर कोई काम अधूरा नहीं करता। उसने बच्चे के पेट में भूख दी तो मां के

स्तन में दूध भी दिया। इसलिए उस पर श्रद्धा रखकर जो कुछ होगा, देखूंगा, ऐसी जब निश्चित आवाज अंदर से आयी तो उसे मैं टाल नहीं सका और दूसरे रोज से मांगना शुरू कर दिया। आहिस्ता-आहिस्ता जमीन मिलती गयी वह सारा इतिहास अत्यन्त रमणीय है। मेरे लिए अत्यन्त पावन है। उसमें इतने पवित्र स्मरण पड़े हैं और इतने अमृत-मधुर अनुभव आये हैं कि मैंने उसे अहिंसा का साक्षात्कार नाम दिया है। यह सारा इतिहास दुहराने का यह अवसर भी नहीं और विचार भी नहीं।

श्रम, सम्पत्ति, बुद्धि, जमीन और मन ये पांच ऐसी शक्तियां हैं जो मनुष्य के 'पंचमान' के समान हैं। कुछ वाह्य हैं कुछ आंतरिक हैं। जमीन बाहरी सम्पत्ति है जिसे धन आदि कहते हैं वह भी बाहरी है। श्रम कुछ बाहरी और कुछ अंदर का है। शरीर से श्रम होता है पर प्राण संचार के बिना मानसिक आश्रय के बिना, शरीर काम नहीं करता। शरीर पंचभूतों से बना है। बुद्धि और प्रेम में दो शक्तियां आंतरिक हैं। सम्पत्ति और जमीन में वाह्य शक्तियां हैं। शरीर-श्रम उभयविध शक्ति है। दो जो आंतरिक हैं वे हरेक में कम-बेशी होती हैं। आप बहुत थोड़े मनुष्य ऐसे पायेंगे जिनमें बुद्धि की बिलकुल कमी हो। उनकी गिनती तो पागल में होगी। बाकी लोगों के कम-बेशी परिमाण में बुद्धि होती है। वैसे ही प्रेम का जिसे अनुभव नहीं या अनुभव होने पर भी हृदय में प्रेम संचरित नहीं होता ऐसे मनुष्य बहुत कम मिलेंगे। क्योंकि हर एक मनुष्य मां के प्रेम के अनुभव से जीवन शुरू करता है। जिसे जन्म के साथ ही मां के स्नेह का अनुभव है जिसे बचपन से ही प्रेम का संस्कार मिला, उसका वह संस्कार क्षीण नहीं हो सकता, यह बात मानसशास्त्री जानते हैं। जिन्हें प्रेम-शक्ति का अनुभव नहीं, ऐसे मानव बहुत मुश्किल से मिलेंगे। मिलेंगे ही नहीं, ऐसा कहने की इच्छा होती है। पर ईश्वर की सृष्टि में क्या नहीं हो सकता? मान लें अपवाद स्वरूप कोई एकाध होगा। पर साधारणतया हरेक के पास बुद्धि और प्रेम पड़ा है। बुद्धि के विकास के लिए सज्जन-संगति चाहिए, जिसे तालीम कहते हैं। आज की तालीम नहीं। मेरी शिक्षा की व्याख्या स्कूल जाकर किताब पढ़ना यह नहीं है। यह भी है पर तालीम का मुख्य अर्थ है सज्जन-संगति। जहां समाज में हर मनुष्य को सत्संगति का कुछ-न-कुछ लाभ मिले, ऐसी योजना होगी, वह समाज आगे बढ़ेगा। इसलिए वह बहुत जरूरी होगा कि हर एक बच्चे को और हर एक बालिग को और हर एक मर्द और औरत को सत्संगति का तत्त्व श्रवण का, ज्ञान-चर्चा का मौका मिले। इसी को मैं तालीम कहता हूं। ऐसी योजना गांव-गांव में होनी चाहिए। उसके बिना देश का उत्थान नहीं हो सकता। उसकी एक योजना हमने की थी। वह कुछ दिन चली। जब चली तब देश वैभव के शिखर पर था। पर अब वह गिर पड़ा है। आज तालीम कॉलेजों में सीमित है। वह गांव-गांव नहीं पहुंचती। तालीम जैसी देनी चाहिए वैसी नहीं दी जाती। क्योंकि तालीम पैसे के आधार पर दी जाती है, पैसे के लिए दी जाती है। जिसके आगे-पीछे और बीच में पैसा पड़ा है वह सत्संगति की योजना नहीं होती। मान लें उसमें कुछ भलाई है, तो भी वह योजना अपने देश के लिए बेकार साबित हुई है। निकट भविष्य में हम नहीं समझते सब जगह कॉलेज खुलेंगे।

पुरानी व्यवस्था थी जिसने ज्ञान का ग्रहण किया, कुछ पराक्रम किया जिसकी इन्द्रियां शिथिल नहीं हुई हैं, उसे परिव्रज्या ग्रहण करनी चाहिए। आजकल मैं परिव्रज्या लेकर घूम रहा हूं। लोग मेरा आदर करते हैं। यह इसलिए कि यह बात इस जमाने में हो रही है। पुराने जमाने में तो, मैं जिनके चरणों की रज के समान भी नहीं, ऐसे महान ऋषि घूमते रहे। तुलसीदास ने कहा है—'हे गंगे, तू मुझे ऐसी मति दे कि तेरे किनारे भगवान का स्मरण करता हुआ विचरता रहूं।' ऐसे महात्मा सतत घूमते थे और उन्होंने उसे अपने जीवन का अंग माना था पर मैं उनकी गिनती नहीं करता, ज्ञानदेव, शंकराचार्य, भगवान बुद्ध इत्यादि, जो आसेतु हिमालय घूमे उनकी बात मैं नहीं करता। उनके पास एक संदेशा था जो सुनाये बिना उन्हें चैन नहीं था। आज मेरा गौरव केवल इसलिए है कि हवाई जहाज के जमाने में मैं पैदल-पैदल घूम रहा हूं। मुझे मूरख तो नहीं कह सकते। इसलिए मेरा आदर करना लाजिमी होता है। पर यह कोई खास बात नहीं है। वह तो अपने जीवन के लिए जो बात मानी है उसके लिए कुछ अनुभव के बाद परिव्रज्या लेना हमारे लिए लाजिमी था। परिव्राजक लोग गांव-गांव घूमते थे। लोगों को ज्ञान देते थे जो ज्ञान पुस्तकें पढ़ने से नहीं होता वह ज्ञान इनलोगों के श्रवण से होता था। इसलिए श्रवण-भक्ति को हमने महत्त्व दिया है। गांव-गांव के लोगों को इन परिव्राजकों के जरिये ज्ञान मिलता था। तब ज्ञान का प्रचार गांव-गांव के कोने-कोने में होता था। आज जिसे थोड़ा भी ज्ञान हासिल है वह फौरन शहर में आ जाता है और गांव का ज्ञान की दृष्टि से शोषण होता है। जैसे गाय घास खाती है पर बच्चे को घास नहीं खिलाती। बच्चे को तो दूध पिलाती है। वैसे वे परिव्राजक लोग तरह-तरह का ज्ञान पचाते और लोक-सुलभ भाषा में, गुणग्राही भाषा में, जैसे बच्चे को चम्मच से दूध पिलाते हैं, वैसे पिलाते थे; और लोक-भाषा में, जिसे लोग समझ सकते हैं, ऐसी भाषा में ज्ञान देते थे। पढ़-पढ़ कर आंखें खराब हो सकती हैं। लेकिन सुन-सुन कर कान खराब हुए या थकान आ गयी हो यह नहीं सुना कभी। कान मंद हो सकते हैं पर अति श्रवण के कारण नहीं,

कान की कुछ खराबी के कारण। कान ज्ञान-प्राप्ति का अक्षय साधन है। जो काम यूनिवर्सिटी नहीं कर सकती थी, वह काम परिव्राजक करते थे। कुछ-कुछ गांवों में दो-दो, तीन-तीन महीनों तक ठहरते थे। जड़ी-बूटियों का जो कुछ उपयोग जानते थे, उसका लोगों को मुफ्त लाभ मिलता था। ऐसा महान ज्ञान प्रचार का तरीका निश्चित था। एक उम्र के बाद परिव्राजक होना चाहिए यह धार्मिक बात रही। उस जमाने में जो आज नहीं जानते वह ज्ञान भी लोगों को होता था। इसलिए वेदांत टिका, इसलिए नीति-धर्म फैला और इसीलिए यह देश टिका, ऐसा मैं मानता हूं। यह योजना नये सिरे से हमें करनी होगी। तब ज्ञान गांव-गांव पहुंचेगा। रेडिया आदि से यह काम नहीं होने वाला है। यद्यपि मैं इनकी कदर करता हूं। लेकिन अनुभवी पुरुषों के ज्ञान की सीधी आवाज जिनके कान को सुनने को मिलती है, वे कान धन्य हैं। जिन्हें रेडियो से सुनने को मिलता है उनके कान इतने धन्य नहीं हो सकते। यद्यपि मैं उन साधनों की कदर करता हूं। पर जो ज्ञान-प्रचार की योजना हमारे पुरखों ने बनायी थी, वह हमें करनी होगी। गांव-गांव जाना बहुत लाभदायी होगा। लोगों को भार नहीं मालूम होगा। उपकार ही मालूम होगा। आज अगर साक्षरता प्रचार की बात करते हैं तो करोड़ों रुपये की बात होती है। पर इस तरह शहर के उत्साही लोग, जिन्होंने जीवन का कुछ अनुभव लिया हों, जो चरित्रवान हों, जिनके बाल-बच्चे घर संभाल सकते हों, ऐसे लोग आत्मा के विकास के लिए हरि नाम गाते-गाते, गांव-गांव में घूमें तो ज्ञान-प्रचार होगा। उसके आधार पर देश टिकेगा।

दूसरी बात शरीरश्रम की। एक तो बुद्धिदान हुआ। दूसरा श्रमदान। यह शक्ति हर एक को थोड़ी-थोड़ी दी है। कुछ लोगों को अधिक दी है। जिन्हें दी है वे श्रीमान हैं जिन्हें श्रम की आदत है वे आज के श्रीमानों से ज्यादा श्रीमान हैं। क्योंकि वे प्रत्यक्ष पैदा करते हैं। मैं चाहता हूं हर कोई समझे कुछ-न-कुछ पैदा करना धर्म है, जिसे मैं ब्रह्मकार्य कहता हूं। जो वकील, व्यापारी आदि हैं वे भी थोड़ा समय दें। वकील वकालत करते हैं, तो मैं यह नहीं कहता कि वे सेवा नहीं करते। वे प्रमाणिकता से वकालत करते हैं तो उत्तम सेवा करते हैं, यह मैं मानता हूं। पर उत्पादन की बहुत बड़ी आवश्यकता है। जनसंख्या बढ़ने की हालत में उत्पादन की आवश्यकता बढ़ने ही वाली है। शरीर-श्रम के बिना मनुष्य को भूख लगाने वाली नहीं है। एकाध घंटा श्रम करना बहुत उपयोगी होता है। नागरिक लोग, विद्यार्थी लोग, शिक्षक लोग आदि सारे इस बात को समझेंगे तो आप देखेंगे कि भारत सेवक-समाज घर-घर बनेगा। लोग भारत सेवक समाज की योजना करते हैं वह योजना जितनी कारगर होगी उससे अधिक कारगर यह योजना होगी कि जमाने की मांग देखकर हर कोई यह व्रत ले कि जिस रोज श्रम नहीं करेंगे उस रोज हमारे जीवन में कुछ कमी रह जायेगी। महात्मा गांधी ने हमें सूत कातने की शिक्षा दी थी। उसे बूढ़ा-बच्चा हर कोई, हर हालत में, कर सकता है। जो पैदावार होती है उसका उपयोग भी है। इसलिए उन्होंने कातने की बात रखी थी। कातने का मतलब केवल कातना ही नहीं। दूसरा कोई भी कार्य हो, जिससे देश के लिए कुछ उत्पादन हो तो देश की बहुत बड़ी सेवा होगा। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप रोज कुछ-न-कुछ काम करें। मैं यह नहीं कहता कि जिस रोज आपने काम नहीं किया, पाप किया है। फिर भी मैं कहता हूं कि जिस रोज शरीरश्रम नहीं किया, उस रोज जीवन में कुछ-न-कुछ कमी रही। एक तो बुद्धि-शक्ति का दान दूसरा श्रम-शक्ति का दान और तीसरा प्रेम-शक्ति का दान इससे आसान कोई काम ही नहीं है।

हम ऐसे कमबख्त हैं कि, जो चीज सबसे मीठी है, जिसे हमने चखा है, वह दें तो हमें तकलीफ नहीं होने वाली है पर हम मन में प्रेम नहीं रखते, हमारे मन में द्वेष और मत्सर होता है। यहां तक कि स्वार्थ को सब कुछ मान लेते हैं। दूसरे की चिन्ता नहीं करते। कोई बीमार है आप उससे मिलने गये। आप करते क्या हैं? बीमारी वह भुगत रहा है उसकी दवा हो रही है पर आप उसके पास जाते हैं, उससे बातें करते हैं, उसे दिलासा देते हैं। उसे लगता है मेरा प्रियजन मुझसे मिलने आया और इतने से उसको संतोष होता है। मनुष्य मरने के समय इच्छा करता है कि प्रेमी दर्शन दे। वह प्रेमी मुझसे मिलने जाता है। मृत्यु से तो वह बचा नहीं सकता, यह दोनों जानते हैं। पर जाते समय प्रेमी का दर्शन हुआ इतने भर से उसे संतोष होता है और जो मिलने के लिए गया उसे भी संतोष होता है कि आखिर समय मैं मिलने गया। अमृत का नाम हमने सुना है। कहते हैं वह मीठा है, उसे जो चखेगा वह अमर होगा। वह हमने देखा नहीं है। लेकिन उससे बढ़कर चीज हमने देखी है। प्रेम से बढ़कर अमृत हमारी कल्पना में नहीं है। उसे देने के लिए न शरीर में शक्ति चाहिए, न इस्टेट चाहिए, केवल मधुर शब्द चाहिए। यह चीज अगर हम पड़ोसी को नहीं दे सकते, तो भाइयो, हम उससे पा भी नहीं सकते।

परमेश्वर की यह खूबी है कि वह गिन-गिन कर नहीं देता। दसगुना देता है। हम एक दें तो उसका दसगुना देता है। हम सौ दें तो वह हजार गुना देता है। इस तरह प्रेम में देना ही देना है। पर हमारा दिल फूलता नहीं। दूसरे का दुख देखकर आंसू बहते नहीं, अपने दुख से ही आंसू बहते हैं। यह पशु का लक्षण है। मानव का लक्षण तो यह है कि वह दूसरे के दुख से दुखी होता है और→

जरूरत है 'सत्याग्रही' सिद्धान्त अपना लेने की

❑ बाबूराव चन्दावार

दक्षिण अफ्रीका के अनुभव लेकर महात्मा गांधी 1915 में भारत लौट आये थे। 29 मई, 1915 को उन्होंने गुजरात के साबरमती नदी किनारे कोचरब सत्याग्रह आश्रम का निर्माण किया था। आगे जाकर वह भारत की स्वाधीनता का प्रेरणा-केन्द्र बना। महात्मा गांधी को सत्याग्रह की जो दृष्टि प्राप्त हुई थी उसका पोषण कोचरब आश्रम में होने लगा था। स्व. जमनालाल बजाज द्वारा महात्मा गांधी को सुझाया गया था कि वर्धा में सत्याग्रह आश्रम का निर्माण किया जाये। इसके लिए महात्मा गांधी द्वारा विनोबाजी को वर्धा भेजा गया और उन्होंने वर्धा के महिलाश्रम में सत्याग्रह आश्रम का प्रारम्भ किया। बाद में विनोबाजी धाम नदी किनारे पवनार चले गये। उस स्थान का उन्होंने 'परमधाम' नामकरण किया। इस तरह स्वाधीनता आंदोलन में स्वाधीनता की प्रत्यक्ष साधना करने हेतु जिन एकादश व्रतों का महत्त्व महात्मा गांधी ने माना था, उनकी साधना करने के लिए आश्रमों का निर्माण किया गया था। सेवाग्राम आश्रम इसका केन्द्र रहा।

आदर्श प्रस्तुत करने के उपाय : स्वाधीनता प्राप्ति हेतु साधना की आवश्यकता विनोबाजी को भी महसूस हुई थी। उन्होंने सक्रियता से उसे अपनाया भी। असाधारण लगने वाली ऋषि खेती, कांचन-मुक्ति आदि के अनेकानेक प्रयोग भी उन्होंने किये थे। महात्मा गांधी ने 1940 में प्रथम सत्याग्रही के नाते विनोबाजी को चुना। उनका परिचय 'हरिजन' में प्रकाशित किया था। इससे स्पष्ट हो गया था कि विनोबाजी की साधना प्रतिफलित हो चुकी है। महात्मा गांधी ने स्वाधीनता प्राप्ति हेतु सत्याग्रह आश्रमों का निर्माण करके सत्याग्रह के आचरण को प्रतिष्ठा प्राप्त करा दी थी। स्वाधीनता आंदोलनों के लिए जितने सत्याग्रह किये गये थे उनको माध्यम बनाकर अपेक्षित आचरणों को प्रदर्शित करना जरूरी माना गया, उन्हें हर समय सफलतापूर्वक अपनाया ही गया। लक्ष्य विचलित न हो पाये, इसका ध्यान रखा ही गया था। आश्रमों द्वारा जो सत्याग्रह के आदर्श प्रस्तुत किये गये थे वह सब दिशा सूचक एवं मार्गदर्शक अवश्य बन पाये थे। इस तरह महात्मा गांधी ने आश्रमों द्वारा आदर्श प्रस्तुत करने के उपाय किये थे। उनका एक ऐसा सिलसिला बन गया था कि राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद भी वह थम नहीं पाया।

आश्रमों द्वारा सत्याग्रह के आचरणों का आदर्श प्रस्तुत कर लेने के साथ ही रचनात्मक कार्यक्रमों की कल्पना की गयी थी, उन्हें भी चलाया गया था। उनपर आश्रमों द्वारा प्रस्तुत आदर्शों का प्रभाव स्थायी हो, इसका ध्यान रखा गया था। रचनात्मक कार्य करने वाली सभी संस्थाएं, आश्रमों द्वारा प्रस्तुत आदर्शों के प्रति सद्भावना से प्रेरित होकर ही अपनी दिनचर्या चलाने में लगे हुए थे। आश्रमों के साथ रचनात्मक कार्य करने वाली संस्थाओं का अनुबंध बन पाया था। इसलिए रचनात्मक कार्य करने हेतु जो शिक्षा तथा प्रशिक्षण चलाया जाना जरूरी था, उनके विद्यालयों में भी सत्याग्रह के आदर्शों के प्रति आस्था विकसित करना सम्भव हुआ ही था। इस तरह खादी-ग्रामोद्योग विद्यालयों का निर्माण किया गया, जिनके पाठ्यक्रम में आश्रमों के आदर्शों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया था।

यश-अपयश की समालोचना : राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त कर लेने के बाद भी खादी-ग्रामोद्योगों तथा अन्य रचनात्मक कार्यों को चलाते रहना अनिवार्य माना गया था। क्योंकि रचनात्मक कार्यों द्वारा ही वास्तविक स्वाधीनता प्राप्त की जा सकती है, इसकी धारणा महात्मा गांधी ने बना ली थी। इसमें रुचि लेने वाले तथा जिन्होंने इसके लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था, उनमें (स्व.) धीरेन्द्र मजूमदार अग्रणी थे। बिहार में स्थित जमुई जिला में 'खादीग्राम' का निर्माण करके वहां खादी तथा रचनात्मक कार्यों का प्रशिक्षण-केन्द्र का गठन धीरेन्दा द्वारा किया गया। इसी तरह जेपी ने भी नवादा जिला के सोखोदेवरा गांव में प्रशिक्षण का केन्द्र शुरू किया। वैसे देश में कई स्थानों पर खादी विद्यालय चलाये गये। इसके बाद ग्रामस्वराज्य को साकार करने हेतु सर्वांगीण शोधकार्य के आधार पर उसे गांवों में लागू किया जा सके, इसकी अनिवार्यता समझते हुए प्रयास किये गये और उसे खादीग्राम तथा सोखोदेवरा में विशेष तौर पर चलाने की कल्पना की गयी थी।

→दूसरे के सुख से सुखी होता है। इसलिए इस मार्ग का संतों ने प्रचार किया और कहते रहे कि और कुछ दो या न दो, पर प्रेम का दान देते रहो, तो परमेश्वर का प्यार मिलेगा। इसके लिए नम्र वाणी और मीठी वाणी चाहिए। जो अपने लिए वासना हो वही दूसरे के लिए हो। मुझे कोई दुख न दे सुख ही दे ऐसा मैं मानता हूं, तो मुझे भी दूसरे को सुख देने की वृत्ति रखनी चाहिए। इन तीन शक्तियों का दान आध्यात्मिक दृष्टि से होगा ये तीनों देने पर बाकी का सारा सहज दिया जाता है। जमीन का दान और सम्पत्ति का दान अत्यन्त आसान हो जाता है, जहां प्रेम है, बुद्धि है और शरीरश्रम करने की ताकत है। ❑

(11.1.1954 को पटना में किया गया प्रवचन')

भूमि-समस्या का समाधान करने हेतु भूदान-कार्य का आरम्भ हुआ था। उसका विकास ग्रामदान में हुआ। सर्वोदय समाज-रचना करने हेतु 'भूदान मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसात्मक क्रांति' की दिशा में बढ़ने के लिए भारतीय लोकजीवन को प्रेरित करना विनोबाजी को अपेक्षित था। इसीलिए प्रचलित एवं ज्वलंत समस्याओं को ध्यान में लेते हुए उनका समाधान खोजने के लिए उन्होंने अपनी पदयात्रा के मार्ग पर जो पड़ाव आये थे उनमें से कुछ का चुनाव करके वहां उन्होंने आश्रमों का निर्माण किया। इनमें असम का मैत्री आश्रम, पंजाब में पठानकोट का प्रस्थान-आश्रम, बिहार में बोधगया का समन्वय-आश्रम तथा मध्य प्रदेश में इन्दौर का विसर्जन-आश्रम विशेष अर्थ में जाने जाते हैं, जिनका एक इतिहास बना हुआ है।

महात्मा गांधी से लेकर विनोबा, धीरेन्दा, जेपी तक आश्रमों द्वारा जिस प्रकार की साधान करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया था उसका सर्वोदय समाज-रचना की दृष्टि से विशेष महत्त्व माना गया है। पर 'सत्याग्रह-दर्शन' को इसके द्वारा पुष्ट एवं विकसित करने की जहां तक बात है वह कहां तक सध पाया, इसे ध्यान में लेने की आवश्यकता थी एवं अभी भी ध्यान में लेना आवश्यक है। क्योंकि रचनात्मक कार्य करने वाली संस्थाएं, उनके प्रशिक्षण-केन्द्रों का जिस तरह 'सत्याग्रह-दर्शन' के साथ अनुबंध अपेक्षित था, वह बन पाया या नहीं बन पाया, इसकी समालोचना कर लेने की आवश्यकता थी एवं अभी भी है। क्योंकि जब यश तथा अपयश देखा जाता है तब यश तथा अपयश के कारणों के यथार्थ भी देखा-समझा जाता है, जिससे दृष्टिकोण निर्दोष करते रहना सम्भव होता है। शायद इस दिशा में सोचा नहीं गया है। इसलिए बदले हुए नये संदर्भ में इस पर गौर करना जरूरी हो गया है। इसके बिना वास्तविकता समझ में आ नहीं सकती है।

हिन्दू-राष्ट्रवादी आक्रामकता से सुरक्षा चाहिए : हिन्दू सनातन धर्म का प्रभाव जमाने के लिए उनके संगठनों द्वारा जो प्रयास किये जाते रहे हैं, उनमें सभी धर्मों के प्रति समभाव रखने का व्रत सत्याग्रह-दर्शन में मानने वाले आश्रमों तथा रचनात्मक संस्था, संगठनों में चलाया जाता रहा है। महात्मा गांधी स्वयं को हिन्दू मानते ही थे। पर उनका हिन्दू सहिष्णु था अन्य किसी भी धर्म के प्रति असहिष्णु नहीं था। लेकिन हिन्दू धर्म के सनातनियों ने महात्मा गांधी का अन्य सभी धर्मों के प्रति जो सहिष्णु भाव था उसके प्रति द्वेषमूलक भावना पाल रखी है। इसके चलते ही सहिष्णुता खो बैठे सिरफिरे सनातनी हिन्दू ने ही महात्मा गांधी की हत्या भी कर दी! सनातनी हिन्दू धर्म सम्प्रदाय ने हिन्दू-राष्ट्रवाद को पुरस्कृत करके अन्य धर्म सम्प्रदायों में बहुराष्ट्रवाद का बीज बोया है, जिसमें से हिन्दू फासीवादी प्रवृत्तियों के साथ ही अन्य धर्म सम्प्रदायों में भी धार्मिक निराधार आस्था को जताने वाला फासीवादी तत्त्वों से बचने का प्रश्न बहुत पहले ही उपस्थित हुआ था। इसकी राजनीति भी होने लगी, जिससे धर्म सम्प्रदायों द्वारा पुरस्कृत अनुशासन को अपनाये जाने से फासीवादी राजनीति का प्रारम्भ इस देश में हुआ है। इनके द्वारा आक्रामक राजनीति उत्तेजित की भी गयी है। इसका स्पर्श आश्रमों तथा रचनात्मक संस्था, संगठनों को नहीं हो, इसकी सावधानी रखना आवश्यक हो गया था। धर्म-सम्प्रदायों में जिनकी अतिरंजित आस्था बनी हुई है, उनमें से कुछ आश्रमों, रचनात्मक संस्था, संगठनों में अपना अस्तित्व बनाये रखने की कोशिश करने लगे। इस तरह के तत्त्व आश्रमों तथा रचनात्मक संस्था, संगठनों में भी घुसपैठ करना चाह रहे थे। आश्रम तथा रचनात्मक संस्था, संगठनों के संचालकों द्वारा अपेक्षाकृत सावधानी नहीं रख पाने के कारण इस घुसपैठ करने वाले तत्त्वों को अवसर भी मिल गया और वे अपना हिन्दू-राष्ट्रवादी प्रभाव जमाने का प्रयास भी करने लगे। जयप्रकाश नारायण द्वारा बिहार आंदोलन चलाया गया। उसमें हिन्दू-राष्ट्रवाद में मानने वाला राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ भी शामिल हुआ था। जेपी ने अपेक्षाकृत राष्ट्रीय हित में परिवर्तन लाने की दृष्टि से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को बिहार आंदोलन में प्रवेश करने दिया था। बिहार आंदोलन का चरित्र पूरी तरह निर्दलीय रहे, इसका अंत तक आग्रह रखा गया था और वह सफल भी रहा। लेकिन संघ परिवार ने नाजायज फायदा उठाने की ठान ली थी। जेपी, गांधी तथा विनोबा द्वारा चलाये गये संस्था-संगठनों पर नियंत्रण कर लेने के इरादे से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ सक्रिय हो गया है। इसमें सफलता प्राप्त करने हेतु वह हिन्दू-राष्ट्रवाद द्वारा पुरस्कृत फासीवाद को आजमाने भी लगा है। इसकी आक्रामकता का अनुभव महात्मा गांधी के सेवाग्राम आश्रम के संदर्भ में इसके पूर्व आया ही था। अब विनोबाजी के बोधगया स्थित 'समन्वय आश्रम' के संदर्भ में भी वह अनुभव आने लगा है। इसलिए गांधी-विनोबा-जेपी के आश्रम तथा संस्था, संगठनों को राजनैतिक गतिविधियों से मुक्त रख पाने का प्रश्न उपस्थित हो गया है, जिसके द्वारा वास्तविक स्वाधीनता की लक्ष्य-प्राप्ति के प्रयासों के लिए एक तरह की चुनौती दी गयी है, माना जा सकता है। इस पर सोचने का स्पष्ट दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए था जिसपर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

सूखते जा रहे प्रेरणा-स्त्रोत : विनोाबाजी ने अपना अंतिम प्रयोग का प्रारम्भ ब्रह्मविद्या मंदिर का निर्माण करके ही किया, जिसमें सामूहिक चित्त-निर्माण करने पर ही

ध्यान केन्द्रित किया गया। स्वाधीनता के वास्तविक दृष्टिकोण को पुष्ट करने के लिए इसका लाभ अवश्य मिलेगा, मिल भी रहा है, मानना होगा। वास्तविक स्वाधीनता की दृष्टि में इसका जो प्रयोजन माना जा सकता है उसकी पहचान जिस तरह से होनी चाहिए थी उस तरह से नहीं हो रही है। अर्थात् स्त्री-शक्ति का जागरण वास्तविक अर्थ में ब्रह्मविद्या मंदिर, पवनार में हो ही रहा है, इसमें संदेह नहीं किया जाना चाहिए। फिर भी महात्मा गांधी, विनोबाजी को अपेक्षित वास्तविक स्वाधीनता की दृष्टि से इसमें से जो प्रकाश किरणें निकलने की अपेक्षा की जा रही थी उनकी पारदर्शिता अभी समझ के बारह ही दिखायी देती है, जिसपर ब्रह्मविद्या मंदिर की साधिकाओं को भी सोच लेना अनिवार्य है। राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त कर लेने के बाद जिस वास्तविक स्वाधीनता की दिशा में बढ़ते रहने का प्रश्न है उसका समाधान किस तरह किया जा सकता है, इसका दिग्दर्शन ब्रह्मविद्या मंदिर से हो, इसकी अपेक्षा करना गलत नहीं माना जा सकता।

स्वाधीनता आंदोलन को प्रेरणा देने वाला सेवाग्राम आश्रम इस समय दुनिया के लिए एक महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल बना हुआ है। दुनिया भर के लोग इसे देखने के लिए आते रहते हैं। गांधीजी के सिद्धान्त एवं विचारों से अवगत होने की चेष्टा भी करते रहते हैं। आश्रम में वास्तविक स्वाधीनता आंदोलन को बल प्रदान करने की दृष्टि से जो गतिविधियां चलायी जाती रही थीं वे इस समय वहां नहीं चल रही हैं। मात्र पुरानी स्मृतियों की याद दिलाने के लिए जो मकान आदि बने हुए हैं वे प्रदर्शनीय बनाकर रखे हुए हैं। सुबह-शाम प्रार्थना होती है। वह आश्रम की विशिष्टता दर्शाती है। श्रम-निष्ठा को भी यहां महत्त्व दिया गया है। स्वाधीनता की वास्तविकता गांवों में दिख पाये, इस दृष्टि से गांव-केन्द्रित प्रयोगशील गतिविधियां जो इसके पूर्व चला करती थीं, वे इस समय नहीं चल रही हैं।

सत्याग्रह दर्शन में मानने वालों का दायित्व : महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाया गया स्वाधीनता का सत्याग्रह आंदोलन सभी भारतीयों की स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए ही था। इसे हिन्दुत्व में मानने वालों ने स्वीकारा नहीं था। क्योंकि उन्होंने हिन्दुओं की ही स्वाधीनता चाहा था। अन्य धर्मों के लोगों को भी स्वाधीनता मिले, वह नहीं चाहते थे। इसीलिए उन्होंने हिन्दू-राष्ट्रवाद को ही अपनाया था। इसकी बुनियाद पर ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ परिवार द्वारा गतिविधियां चलायी जाती हैं। इसमें सावरकरवादी भी मिल गये हैं। महात्मा गांधी तथा विनोबाजी द्वारा चलाये गये आश्रमों तथा रचनात्मक कार्य करने वाली संस्था, संगठनों पर हिन्दू-राष्ट्रवाद की काली छाया नहीं पड़ने पाये, इसका ध्यान अवश्य रखा गया था। लेकिन जो हिन्दुत्व के पारम्परिक संस्कारों में पले-बढ़े, उनमें पूरी तरह से वह संस्कार नहीं मिलना स्वाभाविक था। इसलिए आश्रमों तथा संस्था, संगठनों में जो रहे उनसे भी हिन्दुत्व को लेकर किसी प्रकार से उसके प्रति झुकाव हो जाना स्वाभाविक हुआ करता था। हिन्दू राष्ट्रवादियों की आक्रामकता को जायज ठहराने की दृष्टि से जब उसका समर्थन करने में ही जिन्होंने अपनी आस्था प्रदर्शित करना शुरू किया तब वह समस्या बन गयी। बाबरी मसजिद ध्वस्त किये जाने पर गांधी-विनोबा की संस्था, आश्रमों में से इनेगिने व्यक्तियों ने जब उसका समर्थन किया था तब वह एक समस्या बनी तथा वह चिन्ता का विषय भी बना था। गलत लाभ उठाकर हिन्दू राष्ट्रवादियों ने इसका प्रचार-फैलाव किया था। इसलिए हिन्दू धर्म के प्रति जो आस्था रखते हैं उनकी स्वतंत्रता को सम्मानित करते हुए भी आक्रामक हिन्दू-राष्ट्रवाद को इसके द्वारा पुष्टि नहीं दी जानी चाहिए। इसका ध्यान अवश्य ही रखना होगा। ध्यान नहीं रखा गया इसके प्रमाण मिलने लगे जो वास्तविक स्वाधीनता के प्रति विरोधी तथा विद्रोही स्वर के ही माने जा सकते हैं। इसलिए विनोबाजी ने 'हिंसया दूयते चितं तेन हिन्दू रिती रितः', हिं=हिंसया, हिंसा से, दू=दूयते (चित्त) दुःखित होता है, कहा है। इसे ध्यान तथा आचरण में लाने की आवश्यकता है। *('मैत्री', जनवरी, 2013 से साभार)* अर्थात् हिन्दू-राष्ट्रवाद का संकल्प अपने में आक्रामक है। इसलिए उसमें हिंसा को स्वीकृत किया भी गया है। इसे जानकर ही गांधी-विनोबा-जेपी के आश्रमों तथा संस्था, संगठनों में रहने वालों ने अपनी अहिंसा निष्ठा को जताने के लिए ही हिंसा-विरोध का निर्धारण कर लिया है तथा उसे अपना लिया गया है। इसलिए इसकी मर्यादा का उल्लंघन नहीं होने पाये इसका ध्यान हर समय रखना ही होगा। इस मर्यादा का उल्लंघन कर लेने की घटनाएं इधर हुई हैं, जो चिन्ता का विषय बना हुआ है।

विनोबाजी ने वेदांत तथा श्रमण संस्कृति में समन्वय करने के लिए बोधगया में 'समन्वय आश्रम' का निर्माण किया। आश्रम में कुछ जनकल्याणकारी कार्यक्रम चलाये जाते रहे हैं। आंखों से मोतियाबिन्द निकालकर दृष्टिहीनों को दृष्टि दिलाने के लिए आंखों का दोष निवारण कर लेने हेतु यहां डॉक्टरों द्वारा ऑपरेशन कराने के शिविर वर्षों से लगाये जाते रहे हैं। उससे दृष्टिहीनों को दृष्टि मिली और उन्हें लाभ हुआ। मुम्बई स्थित भंसाली ट्रस्ट द्वारा इधर जो शिविर लगाये गये थे उनके आयोजक संघ परिवार के हैं, कहा जा रहा है। इन्होंने 22 से 30 जून, 2013 एक सप्ताह तक 'बजरंग दल' का शिविर

समन्वय आश्रम में करवाया था जिसे आपत्तिजनक माना गया। क्योंकि बोधगया बुद्ध मंदिर पर जो बम धमाके किये गये उसमें बजरंग दल भी शामिल रहा है, कहा जा रहा है। किसी भी कारण से बजरंग दल का समन्वय आश्रम में शिविर किया जाना उचित नहीं था। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का गुरुदक्षिणा कार्यक्रम भी अनुमति लिये बिना ही समन्वय आश्रम में ही इस समय जबरन किया गया है। इन सारी हिन्दू-राष्ट्रवादी हरकतों से समन्वय आश्रम अपने उद्देश्य से भटक गया है जिसका समाधान आश्रम के संचालक नहीं कर पा रहे हैं। इस तरह सेवाग्राम आश्रम में, बंगलोर के वल्लभ निकेतन में, महाराष्ट्र के पनवेल के निकट नेरे-शांतिवन कुष्ठ-निवारण संस्था में भी संघ परिवार अपनी गतिविधियां चलाने की कोशिश करता रहा है जिसपर आपत्ति की गयी है। जब तक गांवों में स्वाधीनता पहुंच नहीं पाती है तब तक वास्तविक स्वाधीनता का आंदोलन चलते रहना चाहिए। क्योंकि स्वाधीनता आंदोलन की एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसे चलाते रहने में ही सत्याग्रह दर्शन की सार्थकता मानी जा सकती है। इसमें बाधाएं डालते रहने की दुष्प्रवृत्तियां भी चलती ही रहेंगी जिसमें धर्म सम्प्रदायों की आक्रामकता शामिल रहेगी ही। इन्हीं में से एक हिन्दू-राष्ट्रवादी आक्रामक प्रवृत्ति है जिसका संसर्ग गांधी-विनोबा-जयप्रकाश नारायण द्वारा निर्मित आश्रमों तथा रचनात्मक संस्था-संगठनों में होते रहने की घटनाएं सामने आने लगी हैं। इस पर सत्याग्रह दर्शन में मानने वालों को गम्भीरता से सोचने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए बाध्य होना पड़ता है जिसका तात्पर्य है कि गांधी-विनोबा-जयप्रकाश के आश्रम तथा रचनात्मक कार्य करने वाली संस्था-संगठनों को बदलते हुए नये संदर्भ में अपना प्रयोजन स्थापित करना होगा। इसमें संघर्ष के प्रसंग उपस्थित हो ही सकते हैं जिन्हें शायद टाला नहीं जा सकता। विनोबाजी ने कहा है उसे ध्यान में लेते हुए वह संघर्ष के प्रसंग सत्याग्रह के अनुरूप 'सत्यग्राही' सिद्धान्त ही रखने होंगे। सत्याग्रह करने के पूर्व 'सत्यग्राही' होना चाहिए। इसका सिद्धान्त विनोबाजी ने प्रस्तुत किया है, जिसकी किसी भी कारण से उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। ❑

❑ *डी-1, 13, सईनगर, सिंहगढ़ रोड, पुणे-411030 (महाराष्ट्र), फोन : 020-24250693*

इन न्यस्त स्वार्थों का विरोध करें

देश की राष्ट्रीय राजनीति इस समय एक भयावह दौर से गुजर रही है। दुनिया में सबसे बड़ा और संभवतः प्राचीनतम लोकतंत्र खतरे में है।

भ्रष्टाचार के अनेक विकराल घोटालों और महिलाओं के विरुद्ध व्यापक हिंसा की क्रूरतम घटनाओं के बाद निम्न दो घटनाएं, जिनमें सत्तारूढ़ और विपक्ष के सभी राजनैतिक दल एक हो गये हैं, देश के लोकतंत्र को एक खतरनाक मोड़ पर खींच लायी हैं :

1. सूचना के अधिकार (RTI) के अंतर्गत आवश्यक जानकारी देने के प्रावधान से राजनैतिक दलों को मुक्त करने वाला बिल संसद में विचाराधीन है।

2. जेल में रहते हुए चुनाव लड़ने की पात्रता समाप्त होने तथा किसी भी कोर्ट से 2 साल या ज्यादा की सजा मिलने पर संसद या विधानसभा की सदस्यता समाप्त करने के संबंध में दिये गये सुप्रीम कोर्ट के फैसले को नये कानून के द्वारा बदलना।

सहज ही समझा जा सकता है कि 162 दागी सदस्यों वाली हमारी वर्तमान संसद और विधानसभाओं में बैठे अपराधी प्रतिनिधि इन फैसलों के बाद न केवल स्वयं बच जायेंगे, बल्कि अन्य अपराधियों के लिए भी विधानसभाओं और संसद में जाने का रास्ता खोल देंगे। करोड़ों रुपयों का काला धन पार्टी के लिए चंदे के रूप में प्राप्त कर उसकी जानकारी R.T.I. के अंतर्गत न देने की छूट से देश में बड़े पैमाने पर राजनैतिक दल काला धन सफेद करने की गारंटी प्राप्त कर लेंगे।

चूंकि सत्ता और चुनाव की राजनीति से जुड़े पक्ष-विपक्ष के सभी दल ये दोनों कानून पास कराने पर आमादा हैं, इसलिए गांधी, विनोबा, जेपी के विचारों के प्रतिनिधियों को देश के लोकतंत्र को इस आसन्न संकट से बचाने के लिए आगे आना चाहिए तथा शांतिपूर्ण तरीके से यथाशक्य विरोध व्यक्त करना चाहिए।

यथासम्भव निम्न कार्यक्रम लिये जा सकते हैं :—

1. जिला कलक्टर (DM) के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन, 2. संसद सदस्यों/विधायकों के निवास के आगे अथवा सार्वजनिक स्थलपर धरना, 3. कॉलेज-विश्वविद्यालय अथवा सार्वजनिक स्थानों पर विरोधस्वरूप हस्ताक्षर अभियान, 4. सार्वजनिक स्थानों पर सभाएं कर विरोध प्रदर्शन तथा जनजागरण।

मित्रो, इन कानूनों का बनना देश के लोकतंत्र को राजनीति के छद्म रूप में अपराधियों के हवाले कर देने जैसा होगा, जिससे मुक्त कराना आसान नहीं होगा। अतः जहां भी, जितना भी सम्भव हो, विरोध प्रकट कर जन-भावना तैयार करने का भरसक प्रयत्न हमें करना चाहिए। **–भवानी शंकर कुसुम**

संयोजक, संपूर्ण क्रांति राष्ट्रीय मंच

एक यथार्थ संत की जीवन-धारा

❑ बद्रीनाथ सहाय

गोदा के भक्ति-भाव से भरे वातावरण में दस वर्ष की उम्र में ही विनायक (विनोबा) को संकल्प लेने की श्रद्धा जगी कि ''मैं आजीवन ब्रह्मचर्य धारण करूंगा।'' विनोबा सच्चे अर्थ में 'बाल ब्रह्मचारी' थे। इस निर्णय से सबको मालूम हो गया कि विनायक कोई विरल आत्मा हैं।

ब्रह्मचर्य और संन्यास की धुन तो थी ही, उसमें आजादी की तमन्ना भी जागृत हुई। भारत से अंग्रेजों को हटाने के लिए जो क्रांति करनी पड़े, उसके वास्ते सिर भी देना पड़े तो वह अर्पण कर देने की तमन्ना थी। 21 साल की उम्र में बालवैरागी ने गृह-त्याग किया। एक तरफ बंगाल की क्रांति का आकर्षण था तो दूसरी तरफ हिमालय की शांति पुकार रही थी। उन्हीं दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में गांधीजी ने अपने व्याख्यान में राजा-महाराजाओं और वायसराय को भी खरी-खोटी सुनाकर जनता को निर्भयतापूर्वक आजादी की लड़ाई में शरीक होने हेतु आवाहन किया। अखबारों में विनायक ने इसे पढ़ा। गांधीजी के भाषण में विनोबा को बंगाल की क्रांति और हिमालय की शांति दोनों का संगम तीर्थ ही मिल गया। गांधीजी को पत्र लिखा। गांधीजी ने पत्र का जवाब देते हुए लिखा—''इस प्रकार के प्रश्नों का समाधान बातों से नहीं होता, जीवन जीने से होता है।'' विनायक अहमदाबाद सत्याग्रह आश्रम बापू के पास पहुंच गये। वहां देखा बापू सब्जी काट रहे थे। विनायक को श्रम और स्वाश्रय का पाठ पढ़ने को मिल गया। एक साल के लिए स्वास्थ्य सुधार एवं अध्ययन हेतु बापू से अनुमति लेकर बाहर गये। एक साल के दौरान जो कुछ किया, उसका ब्यौरा एक पत्र में बापू को लिख भेजा। पत्र पढ़कर बापू ने कहा, गोरख ने मछंदर को हरा दिया। दीनबन्धु एण्ड्रूज को बापू ने लिखा, ''लोग आश्रम में कुछ पाने के लिए आते हैं। विनोबा तो आश्रम को अपने गुणों से सिंचित करने आये हैं। वे पाने के लिए नहीं, देने के लिए आये हैं। आश्रम के दुर्लभ रत्नों में से वे एक हैं।''

साबरमती आश्रम में जो जीवन गुजरा वह प्रचण्ड कर्मयोगी का तपस्वी जीवन ही था। चर्खे पर आठ-आठ घंटे कातना। बापू ने पूछा, 'ऐसे शरीर से इतना श्रम कैसे कर लेते हो।' विनोबा ने संक्षेप में कहा, 'काम करने की इच्छाशक्ति से, संकल्प से।' बचपन से ही गीता का आकर्षण था—गीता को जीवन में जीने का, प्रत्यक्ष व्यवहार में गीता को उतारने का। उसमें भी मैं देह नहीं हूं, आत्मा हूं। गीता का यह सिद्धांत मानो उनके जीवन का ध्रुवपद ही था। विनोबा के 12 वर्ष का तप आश्रम को प्राप्त हुआ। ज्ञान, कर्म और भक्ति के त्रिवेणी-संगम से आश्रम की सुगंध चारों ओर फैल रही थी। विनोबा के बालमित्र मोधेजी ने विनोबा से कहा, ''आश्रम की रक्षा के लिए एक अच्छा कुत्ता ढूंढ़ लाया हूं। अब कोई चिन्ता नहीं।'' विनोबा ने कहा, ''आश्रम की रक्षा कुत्ता करेगा या एकादश व्रतों पालन?''

विनोबाजी की एकाग्र दृष्टि अर्जुन जैसी वेधक और एकलक्षी थी। आश्रमी जीवन में विनोबा की जो अन्त्योदय साधना प्रकट हुई, वह आश्रमवासियों को 'सूत के तार से स्वराज्य' हासिल करने के यज्ञ में भागीदार होना था, अतः खादी का एमग्र शास्त्र-निर्माण करने के प्रयोग वहां चलने लगे।

वर्धा आश्रम में दो पीढ़ियां एक साथ साधना कर रही थीं। एक दिन प्रार्थना के बाद विनोबा ने नयी बात रखी, आज तक ये छोटे लोग बड़ों के साथ काम करते थे। अब ये छोटे लोग एक-एक जिम्मेदारी उठायेंगे। बड़े लोग उनकी सूचनानुसार काम करेंगे। ब्रिटिश सरकार जैसी नौकरशाही खड़ी नहीं करनी है। बड़े लोगों की नयी पीढ़ी की ओर देखने की दृष्टि ही बदल गयी।

विनोबा को केवल स्वराज्य ही नहीं चाहिए था। उन्हें 'भवमुक्ति' भी चाहिए थी। ज्ञान, कर्म और भक्ति तीनों के एकरस से रसित उनका जीवन-यज्ञ ही चलता रहा। ग्रामसेवा मंडल की स्थापना कर गांव-गांव में रचनात्मक कार्यक्रमों की शृंखला खड़ी कर दी। उस समय सर्वथा उपेक्षित कुष्टसेवा के भी वे निमित्त बने। उनके इशारे पर अपने प्राणों की बाजी लगाने को तैयार हो जायं, ऐसे युवकों की टीम ही खड़ी कर दी थी। मनोहर दीवाण ऐसे ही एक उत्साही युवक थे। उनको कुष्टसेवा के लिए काम की प्रेरणा दी और 1936 में कुष्ट सेवा की प्रथम भारतीय संस्था स्थापित की। आज का दत्तपुर का कुष्टसेवाधाम इस मनोहरजी की सेवा का फल है। 'सर्वोदय में अन्त्योदय आ ही जाता है, लेकिन हरिजनों की अलग सेवा की जाय, यह मुझे कतई पसन्द नहीं है।' फिर भी विनोबा की जनसेवा में महदंश अन्त्यजों की सेवा का ही रहा। उसमें भी भंगीकाम, चमारकाम और बुनाई-काम—ये तीनों काम हरिजनों के साथ एकरूप होने के लिए ही थे।

1938-39 के दिन थे। दूसरा विश्वयुद्ध हो चुका था। ब्रिटेन के लिए तो वह घर-आँगन की ही लड़ाई थी। भारत उसी का गुलाम देश, इसलिए उसने भारत को भी युद्ध में घसीटना चाहा। यह देखकर बापू का पुण्य-प्रकोप प्रज्वलित हो उठा। सरकार के सामने युद्ध विरोध जाहिर किये और युद्ध

के प्रयासों के साथ असहकार की घोषणा की। सरकार ने इस विरोध को ठुकरा दिया, सत्याग्रह ही एकमात्र उपाय बाकी रहा।

बापू की योजना में इस बार 'व्यक्तिगत सत्याग्रह' की बात थी। रचनात्मक काम में जिसका पूर्ण विश्वास हो, निष्ठावान सच्चरित्र व्यक्ति को ही बापू चुनने वाले थे। चारों तरफ चर्चा चली कि प्रथम सत्याग्रही कौन बनेगा? स्वाभाविक है कि जवाहरलाल, सरदार पटेल, राजेन्द्रबाबू जैसे नेताओं के नाम लोकजबान पर थे। उतने में एक दिन विनोबा को पवनार से बापू का बुलावा आया। बापू ने कहा, 'प्रथम सत्याग्रही के तौर पर तुम तैयार हो। हाथ के काम निपटाने में कितना समय चाहिए?'

'आपका बुलावा और यमराज का बुलावा मेरे लिए एक-सा है। मुझे यहां से पवनार जाने की भी जरूरत नहीं है।'

यूं 1940 में 11 अक्टूबर को विनोबा का प्रथम सत्याग्रही के तौर पर वरण हुआ। लोग तो दंग रह गये। 'कौन है यह विनोबा?' प्रश्नों की वर्षा हुई और बापू तथा महादेव भाई ने उनके बारे में ऐसे सुन्दर परिचयात्मक लेख लिखे जिसमें विनोबा का भीतर का सच्चा सत्व प्रकट हो उठा था।

वैसे तो उन्हें प्रसिद्धि की चाह ही कहां थी? फिर भी एक ही रात में विनोबा सारे भारत में प्रसिद्ध हो गये। महादेव भाई ने उनकी विशेषता इंगित करते हुए लिखा— 'वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं। ऐसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी शायद और भी होंगे। वे प्रखर विद्वान हैं। ऐसे प्रखर विद्वान दूसरे भी हैं। उन्होंने सादगी का वरण किया है। उनसे भी अधिक सादगी से रहने वाले गांधी के अनुयायियों में कुछ लोग हैं। वे रचनात्मक कार्य के पुरस्कर्ता तथा दिन-रात उसमें निमग्न व्यक्ति हैं। वैसे भी कुछ लोग गांधीजी के अनुयायियों में हैं। उनके जैसी तेजस्वी बुद्धिशक्ति वाले भी कुछ हैं। परन्तु इनमें कुछ चीजें ऐसी हैं, जो दूसरों में नहीं हैं। कोई निश्चय, कोई सिद्धांत ग्रहण किया तो उसका उसी क्षण से अमल करना, यह उनका प्रथम पंक्ति का गुण है। उनका दूसरा गुण उनकी निरंतर विकासशीलता है। हममें से मुश्किल से कह सकेगा कि मैं प्रतिक्षण विकास कर रहा हूं। गांधीजी के उपरांत यदि यह गुण मैंने और किसी में देखा हो तो यह विनोबा में देखा है। ऐसे गुणों के कारण 46 साल की उम्र में उन्होंने अरबी जैसी कठिन भाषा का अभ्यास किया। कुरान शरीफ पढ़ने लगे और उसके हाफिज जैसे हो गये।'

योजनानुसार विनोबा ने युद्धविरोधी भाषण देने के लिए गांव-गांव घूमना शुरू किया। 21वीं तारीख को सुबह तीन बजे विनोबा की गिरफ्तारी हुई और गांधीजी ने दूसरे सत्याग्रही के तौर पर जवाहरलाल का नाम जाहिर किया। तीन-तीन बार विनोबा छूटे और फिर-फिर पकड़े गये। आखिर सरकार ने एक साल की सजा जाहिर की।

× × ×

एक बार बाजार में कम्बल खरीदने गये। बेचने वाली बाई ने एक कम्बल का डेढ़ रुपया बताया। विनोबा ने उसके मूल दाम के बारे में जानने की कोशिश की तो पांच रुपये से कम में तो वह बन ही नहीं सकता था।

''तो फिर तुम डेढ़ रुपये में क्यों बेच रही हो?''

''तो फिर मैं क्या करूं? डेढ़ कहती हूं, तो लोग सवा रुपये में मांगते हैं। पांच रुपये मुझे कौन देगा?''

विनोबा ने पांच रुपये देकर कम्बल खरीद लिया। वह स्त्री देखती रह गयी कि यह कलियुग है या सतयुग।

फिर परिश्रमालय के युवकों को सारा किस्सा सुनाकर समझाया कि तुम लोग बाजार भाव बढ़ाना सीखो, तो गरीबों के पास कुछ पहुंचेगा। फिर तो बारिश के दिनों में घास का पूड़ा बेचने वाली स्त्रियों से ये लड़के दो या तीन पैसे के बदले दो आने देकर और घास खरीद कर दाम बढ़ा देते। ऐसा था विनोबा का अर्थशास्त्र का शिक्षण। सार्थक करे वैसा अर्थशास्त्र! अनर्थ करे ऐसा नहीं।

× × ×

पवनार आश्रम का एक लड़का। मेहनती और साफ दिल का। परंतु बेचारे को बीड़ी की लत लग गयी थी। वह छिपकर बीड़ी पी लेता। एक बार किसी आश्रमवासी ने देख लिया। वह लड़का तो घबड़ा गया। एक तो बड़ी पी, सो भी आश्रम में और छिप-छिपकर! विनोबा के पास जाकर उसने अपना अपराध कबूल ही कर लिया।

विनोबा ने कहा, 'बेटा घबड़ाना नहीं। बड़े-बड़े लोग भी बीड़ी पीते हैं। अब मैं तुझे एक अलग कोठरी बताता हूं और बीड़ी का एक बंडल ला देता हूं। जब कभी बीड़ी पीने की इच्छा हो, वहां जाकर पी लेना।'

दूसरे साथियों को यह बात बड़ी विचित्र-सी लगी। न कोई उलाहना, न परहेज। ऊपर से बीड़ी पीते रहने की व्यवस्था।

विनोबा ने सबको समझाया। उसकी बुरी आदत छोड़ने का समय तो देना चाहिए। अहिंसा में, मन में उदारता और सहानुभूति भरा रुख रखना ही पड़ता है। हां, इससे दूसरे किसी का नुकसान न हो, और भोग-विलास न बढ़े उतना आग्रह हम जरूर रखें।

बाद में उस लड़के ने भी बीड़ी पीना छोड़ दिया। परंतु आश्रम के खर्च-बही में आज भी वह बीड़ी का बण्डल खर्च-खाते में लिखा मिलेगा। ❑

(संदर्भ : विनोबा साहित्य)

पर्यावरण की कीमत पर विकास

❑ सुरेश भाई

हिमालयी क्षेत्र में बाढ़, भूस्खलन, भूकम्प की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। उत्तराखंड हिमालय से निकलने वाली पवित्र नदियां— भागीरथी, मंदाकिनी, अलकनंदा, भिलंगना, सरयू, पिंडर, रामगंगा आदि के उद्गम से आगे लगभग 150 किमी तक सन् 1978 से लगातार जलप्रलय की घटनाओं की अनदेखी होती रही है। 16-17 जून, 2013 को केदारनाथ में हजारों तीर्थयात्रियों के मरने से पूरा देश उत्तराखंड की ओर नजर रखे हुए है। इस बीच ऐसा लगा कि मानो इससे पहले यहां कोई त्रासदी नहीं हुई होगी, जबकि गंगोत्री से उत्तरकाशी तक पिछले 35 वर्षों में बाढ़, भूकम्प से लगभग एक हजार से अधिक लोग मारे गये। 1998 में ऊखीमठ और मालपा, 1999 में चमोली आदि कई स्थानों पर नजर डालें तो 600 लोग भूस्खलन की चपेट में आकर मरे हैं। 2010-12 से तो आपदाओं ने उत्तराखंड को अपना घर जैसा बना दिया है। इन सब घटनाओं को यों ही नजरअंदाज करके आपदा के नाम पर प्रभावित समाज की अनदेखी की जा रही है।

यहां की नदियों के किनारे बसे हुए लोग कभी बड़े भाग्यशाली माने जाते थे, क्योंकि उन्हें पेयजल, खेतों की सिंचाई और घराटों को चलाने के लिए पानी आसानी से मिल जाता था। अब स्थिति यहां तक पहुंच गयी है कि घराट और खेती की जमीन तेजी से मलवे में बदल रही हैं। 1991 और 1999 के भूकम्प ने उत्तराखंड के लगभग 800 लोगों को मारा है। इस कारण ढालदार पहाड़ियों पर दरारें आयी हैं। इन दरारों के आसपास हजारों गांव बसे हुए हैं। वैज्ञानिकों ने ऐसे एक हजार से अधिक गांव को सुरक्षित स्थानों पर बसाने की बात भी कही थी। लेकिन इसके बावजूद भी उत्तराखंड में पिछले एक दशक से विकास के नाम पर पहाड़ों की कमर तोड़ने वाली विकास योजनाओं का क्रियान्वयन केवल मुनाफाखोर कंपनियों के हितों में हो रहा है।

मौजूदा स्थिति में विकास के नाम पर 558 परियोजनाओं से 40,000 मेगावाट बिजली उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। इन बिजली परियोजनाओं के निर्माण के लिए नदियों के किनारों से होकर गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्गों को चौड़ा ही इसलिए किया जा रहा है ताकि बड़ी-बड़ी भीमकाय मशीनें सुरंग बांधों के निर्माण के लिए पहाड़ों की गोद में पहुंचायी जा सकें। यहां तो हर रोज सड़कों का चौड़ीकरण विस्फोटों और जेसीबी मशीनों द्वारा हो रहा है। जिसके कारण नदियों के आरपार बसे अधिकांश गांव राजमार्गों की ओर धसते नजर आ रहे हैं। सड़क निर्माण का मलवा नदियों, गाड-गदेरों, जलस्रोतों, ग्रामीण बस्तियों के बीच में उड़ेला जा रहा है। इसी तरह उत्तराखंड में उद्गम से ही बन रहे श्रृंखलाबद्ध सुरंग बांधों के निर्माण से लाखों टन मलवा जिसमें मिट्टी, पत्थर, पेड़ बेहिचक नदियों में फेंके जा रहे हैं। कोई भी उत्तराखंड में मानवजनित विकास के नाम पर इन त्रासदियों की प्रत्यक्ष तस्वीर देख सकता है, जहां बिना बारिश के भी पहाड़ टूटते नजर आ रहे हैं। उत्तरकाशी में 2003 में वरुणावत त्रासदी की घटना भी सितंबर-अक्टूबर में हुई थी।

सुरंग बांधों के निर्माण के लिए पहुंचायी जा रही बड़ी-बड़ी मशीनों ने भी पहाड़ में कम्पन पैदा कर दिया है। यहां वनों में बार-बार आग की घटनाओं ने मिट्टी को नीचे की ओर बहने के लिए मजबूर कर दिया है। नदियों के किनारे बिना रोक-टोक बन रहे होटलों, रेस्तराओं व ढाबों के निर्माण से निकलने वाला मलवा भी नदियों में ही गिरता है। इन सबके चलते न तो तीर्थयात्रियों की सुरक्षा का ध्यान होता है और न ही पहाड़ी गांवों में हो रहे भू-धसाव व बाढ़ के दुष्प्रभाव पर कोई बात हो पाती है।

इस बार की बाढ़ में तीर्थयात्रियों के मारे जाने की वजह से उत्तराखंड में किये जा रहे अनियोजित, अविवेकपूर्ण कार्य का पर्दाफास हो गया, जबकि बाढ़ से पिछले 4 वर्षों में जितना नुकसान हुआ है उसे तो भूला ही दिया गया था। सन् 2008 में जब नदी बचाओ वर्ष मनाया गया तब से आज तक निर्माणाधीन, प्रस्तावित सुरंग बांधों के विरोध को दबाने के लिए बाकायदा बांध समर्थक तथाकथित बुद्धिजीवियों की एक लॉबी बनाकर पक्ष में खड़ा करके नासमझ बहस पैदा करने की कोशिशें करते रहते हैं, जिसका नतीजा प्रकृति के इस रौद्र रूप ने सामने ला दिया है। अब राज्य सरकार भी प्रस्ताव पास कर रही है कि वह नदियों के किनारे निर्माण-कार्य नहीं होने देगी। यह याद बहुत देर से आ रही है, वैसे इसकी पुष्टि तो भविष्य में ही हो पायेगी।

उत्तराखंड में टिहरी बांध के विरोध का सिलसिला अभी आगे थकता नजर नहीं आ रहा है। अब रन ऑफ द रीवर का मुगालता देकर डायवर्टिंग ऑफ द रीवर के महाविनाश का चेहरा किसी से छिपा नहीं है। इस बाढ़ ने यह साबित कर दिया है कि उत्तराखंड में नदी बचाओ अभियान की आवाज एक बार बुलंद हो गयी है। जहां-जहां पर उत्तराखंड

में इस तरह के बांध बन रहे हैं, वहां पर गांवों के नीचे से खोदी जा रही सुरंग के कारण आवासीय मकानों पर दरारें आ गयी हैं, जल-स्रोत सूख गये हैं। खेती की जमीन अधिगृहीत हो गयी हैं। जंगल काटे जा रहे हैं। गांव में आने-जाने के रास्ते विस्फोटों के कारण संवेदनशील हो गये हैं। अब स्थिति यहां तक पहुंच चुकी है कि धरती माता का सब्र का बांध टूट चुका है। इसी का परिणाम है जलप्रलय, बाढ़ और भूस्खलन। ऐसी विषम स्थिति में राज्य की लालसा को देखें तो उसने ऊर्जा प्रदेश का सपना भी नदियों के स्वरूप को अवरुद्ध करके संजोया हुआ है। जबकि यहां नदियों के पास रहने वाले समाज ने चिपको, रक्षासूत्र, पानी रखो और नदी बचाओ चलाकर प्रकृति के साथ एक रिश्ता बनाकर रखा है। यहां आज भी कई गांवों में महिलाएं जब जंगल जाती हैं तो तौलकर चारापत्ती लाती हैं। राज्य में खिट्टा खलड़गांव, कुड़ियालगांव, धनेटी आदि ऐसे सैकड़ों गांव हैं, जहां पर लोगों ने ऐसी व्यवस्था बनायी है।

विकास और पर्यावरण के बीच अघोषित युद्ध ने समाज और प्रकृति के रिश्तों की उपेक्षा की है। उत्तराखंड में अगर 558 बांध बन गये तो इसके कारण ही बनने वाली लगभग 1500 किमी लम्बी सुरंगों के ऊपर लगभग 1000 गांव आ सकते हैं। यहां पर लगभग 30 लाख लोग निवास करते हैं। विस्फोटों के कारण जर्जर हो रहे गांव की स्थिति आने वाले भूकम्पों से कितनी खतरनाक होगी, इसका आकलन नहीं किया जा सकता है। उत्तरकाशी जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग धरासू से डुण्डा तक लगभग 10 किमी के चौड़ीकरण के कारण अब तक एक दर्जन से अधिक लोग मर गये हैं और कई गाड़ियां यहां पर क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं। विस्फोटों से हुए इस निर्माण के कारण पिछले 5-6 वर्षों से इस मार्ग से गंगोत्री पहुंचने वाले तीर्थयात्री घंटों फंसे रहते हैं। यही स्थिति बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री की तरफ जाने वाले सभी राजमार्गों की है। इस विषम स्थिति में ही चारधाम यात्रा होती है। इसी प्रकार उत्तरकाशी में मनेरी भाली फेज-1, फेज-2 (394 MW), अशीगंगा पर निर्माणाधीन फेज-1, फेज-2 (5 MW) ने सन् 2012 में भयंकर बाढ़ की स्थिति पैदा की है। दुख इस बात का है कि मनेरी भाली फेज-1, फेज-2 का गेट वर्षाकाल के समय रात को बंद रहते हैं, जिसे ऊपर से बाढ़ आने पर अकस्मात खोल दिया जाता है। इसी के कारण उत्तरकाशी में तबाही हुई है। यही सिलसिला केदारनाथ से आने वाली मंदाकिनी नदी पर निर्माणाधीन सिंगोली-भटवाड़ी (90 MW), फाटा व्यूंग (75 MW), अलकनंदा पर श्रीनगर (330 MW), तपोवन विष्णुगाड (520 MW), विष्णुगाड (400 MW) आदि दर्जनों परियोजनाओं ने तबाही की रेखा यहां के लोगों के माथे पर खींची है।

2008 में राज्य सरकार ने नदी बचाओ अभियान के साथ खड़ा होकर कही थी कि वह बड़े सुरंग बांधों के निर्माण की स्वीकृति नहीं देगी। इसके स्थान पर सुझाये गये विचारों के अनुसार कहा गया था कि प्रदेश में बिना सुरंग वाली छोटी जलविद्युत परियोजनाओं की अपार सम्भावनाएं हैं। उत्तराखंड में बड़ी मात्रा में सिंचाई नहरें, घराट और कुछ शेष बची जलराशि अवश्य है, लेकिन पानी की उपलब्धता के आधार पर ही छोटी टरबाइनें लगाकर हजारों मेगावाट से अधिक पैदा करने की क्षमता है। इसको ग्राम पंचायतों से लेकर जिला पंचायतें बना सकती हैं। यह काम लोगों के निर्णय पर यदि किया जाय तो, उत्तराखंड की बेरोजगारी समाप्त होगी। मौजूदा स्थिति में उत्तराखंड में 16 हजार सिंचाई नहरें हैं जो निष्क्रिय पड़ी रहती हैं। इन्हें बहुआयामी दृष्टि से संचालित करके इनसे सिंचाई और विद्युत उत्पादन दोनों पैदा की जा सकती हैं। केवल इन्हीं सिंचाई नहरों से 30 हजार मेगावाट बिजली बन सकती है। उत्तराखंड राज्य की आवश्यकता तो 1500 मेगावाट से पूरी हो जाती है। शेष बिजली से यहां के लोगों के भाग्य की तस्वीर बदल सकती है और उत्तराखंड से पलायन हो चुके लगभग 35 लाख लोगों को अपने घरों में पुनर्स्थापित करके रोजगार दिया जा सकता है और बाकी बिजली निश्चित ही देश को मिलेगी। इसी तरह सड़कों का निर्माण ग्रीन कन्स्ट्रक्शन के आधार पर होना चाहिए। जिसमें सड़कों के निर्माण से निकलने वाले मलवे से नयी जमीन का निर्माण हो। पहाड़ी ढलानों के गड्ढों को इस मलवे से पाट दिया जाय और लोगों की टेढ़ी-मेढ़ी जमीन में भी सड़कों के निर्माण से निकलने वाली उपजाऊ मिट्टी से कृषि क्षेत्र को बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार की नयी जमीन पर होर्टीकल्चर का निर्माण हो सकता है। ❑

आवश्यक सूचना

'सर्वोदय जगत'

के सभी सुहृद पाठकों, ग्राहकों, लेखकों व शुभ-चिन्तकों को सूचित करना है कि सर्व सेवा संघ-प्रकाशन की वेबसाइट

www.ssprakashan.com

पर 'सर्वोदय जगत' का प्रत्येक अंक उपलब्ध कराया जा रहा है। कृपया वेबसाइट देखें। –सं.

रावण सुनाए रामायण

❑ अनुपम मिश्र

प्रकृति का कैलेंडर और हमारे घर-दफ्तरों की दीवारों पर टंगे कैलेंडर/काल निर्णय/पंचांग को याद करें, बिलकुल अलग-अलग बातें हैं। हमारे कैलेंडर/संवत्सर के पन्ने एक वर्ष में बारह बार पलट जाते हैं। पर प्रकृति का कैलेंडर कुछ हजार नहीं, लाख-करोड़ वर्ष में एकाध पन्ना पलटता है। हम गंगा नदी पर बात करने यहां जमा हुए हैं तो हमें प्रकृति का, भूगोल का यह कैलेंडर भूलना नहीं चाहिए। पर करोड़ों बरस के इस कैलेंडर को याद रखने का यह मतलब नहीं कि हम हमारा आज का कर्तव्य भूल बैठें। वह तो सामने रहना ही चाहिए।

गंगा मैली हुई है। उसे साफ करना है। सफाई की अनेक योजनाएं पहले भी बनी हैं। कुछ अरब रुपये इसमें बह चुके हैं—बिना कोई परिणाम दिये। इसलिए केवल भावनाओं में बह कर हम फिर ऐसा कोई काम न करें कि इस बार भी अरबों रुपयों की योजनाएं बनें और गंगा जस की तस गंदी ही रह जाय।

बेटे-बेटियां जिद्दी हो सकते हैं। कुपुत्र-कुपुत्री हो सकते हैं पर अपने यहां प्रायः यही तो माना जाता है कि माता, कुमाता नहीं होती, तो जरा सोचें कि जिस गंगा मां के बेटे-बेटी उसे स्वच्छ बनाने में कोई 30-40 बरस से प्रयत्न कर रहे हैं—वहां भी साफ क्यों नहीं होती। क्या इतनी जिद्दी है हमारी यह मां।

साधु-संत-समाज, हर राजनैतिक दल, सामाजिक संस्थाएं, वैज्ञानिक समुदाय, गंगा प्राधिकरण और तो और विश्व बैंक जैसा बड़ा महाजन भी गंगा को तन-मन-धन से साफ करना चाहते हों और यह मां ऐसी कि साफ ही नहीं होती। तो शायद हमें थोड़ा रुक कर कुछ धीरज के साथ इस गुत्थी को समझना चाहिए।

अच्छा हो या बुरा हो—हर युग का एक विचार, एक झंडा होता है। उसका रंग इतना जादुई, इतना चोखा होता है कि वह हर रंग के झंडों पर चढ़ जाता है। तिरंगा, लाल, दुरंगा और भगवा सब उसको नमस्कार करते हैं, उसका गान गाते हैं। उस युग के, उस दौर के करीब-करीब सभी मुखर लोग, मौन लोग भी उसे एक मजबूत विचार की तरह अपना लेते हैं। कुछ समझकर, कुछ बिना समझे भी। तो इस युग को, पिछले कोई 60-70 बरस को विकास का युग माना जाता है। जिसे देखो उसे अपना यह देश पिछड़ा लगने लगा है और वह पूरी निष्ठा के साथ इसका विकास कर दिखाना चाहता है। विकास पुरुष जैसे विश्लेषण सभी समुदायों में बड़े अच्छे लगते हैं।

वापस गंगा पर लौटें। पौराणिक कथाएं और भौगोलिक तथ्य दोनों ही कुल मिलाकर यही बात बताते हैं कि गंगा अपौरुषेय है। इसे किसी एक पुरुष ने नहीं बनाया। अनेक संयोग बने और गंगा-अवतरण हुआ, जन्म नहीं। भूगोल, भूगर्भ शास्त्र बताता है कि इसका जन्म हिमालय के जन्म से जुड़ा है—कोई दो करोड़ तीस लाख बरस पुरानी हलचल से। इसके साथ एक बार फिर अपनी दीवारों पर टंगे कैलेंडर याद कर लें—अभी तक 2013 बरस हुए हैं।

इस विशाल समय, अवधि का विस्तार अभी हम भूल जाएं, इतना ही देखें कि प्रकृति ने गंगा को सदानीरा बनाए रखने के लिए इसे अपनी कृपा का केवल एक प्रकार—यानी वर्षा भर से नहीं जोड़ा था। वर्षा तो चार मास होती है। बाकी आठ मास इसमें पानी लगातार कैसे बहे, कैसे रहे, इसके लिए प्रकृति ने उदारता का एक और रूप गंगा को भेंट किया था—नदी का संयोग हिमनद से करवाया। जल को हिम से मिलाया। तभी यह सदानीरा बन सकी। आज की इस बैठक का नाम गंगा शिखर सम्मेलन रखा गया है, इसलिए यह भी ध्यान दिला दूं कि प्रकृति ने गंगोत्री और गोमुख स्थान हिमालय में इतनी अधिक ऊंचाई पर, इतने ऊंचे शिखर पर रखा कि वहां कभी हिम पिघल कर समाप्त नहीं हो सके। जब वर्षा समाप्त हो जाए तो हिम, बर्फ पिघल-पिघल कर गंगा की धारा अविरल रहे।

तो हमारे समाज ने गंगा को मां माना और ठेठ संस्कृत से लेकर भोजपुरी तक में ढेर सारे श्लोक मंत्र, गीत, सरस, सरल साहित्य रचा। समाज ने अपना पूरा धर्म उसकी रक्षा में लगा दिया। इस धर्म ने यह भी ध्यान रखा कि हमारे धर्म, सनातन धर्म से भी पुराना एक और धर्म है। वह है नदी-धर्म। नदी अपने उद्गम से मुहाने तक एक धर्म का, एक रास्ते का, एक घाटी का, एक बहाव का पालन करती है। हम नदी-धर्म को अलग से इसलिए नहीं पहचान पाते क्योंकि अब तक हमारी परम्परा तो उसी नदी-धर्म से अपना धर्म जोड़े रखती थी।

पर फिर न जाने कब विकास नाम के एक नये धर्म का झंडा सबसे ऊपर लहराने लगा। यह प्रसंग थोड़ा अप्रिय लगेगा पर यहां कहना ही पड़ेगा कि इस झंडे के नीचे हर नदी पर बड़े-बड़े बांध बनने लगे। एक नदी घाटी का पानी नदी-धर्म के सारे अनुशासन तोड़ दूसरी घाटी में ले जाने की बड़ी-बड़ी योजनाओं पर नितांत भिन्न विचारों के राजनैतिक दलों में भी गजब की सर्वानुमति दिखने लगती है। अनेक राज्यों में बहने वाली भागीरथी, गंगा, नर्मदा इस झंडे के नीचे आते ही अचानक मां के बदले किसी न किसी राज्य की जीवन-

रेखा बन जाती हैं और फिर उसका इस राज्य में बन रहे बांधों को लेकर वातावरण में, समाज में इतना तनाव बढ़ जाता है कि फिर कोई संवाद, स्वस्थ बातचीत की गुंजाइश ही नहीं बच पाती। दो राज्यों में एक ही राजनीतिक दल की सत्ता हो तो भी बांध, पानी का बंटवारा ऐसे झगड़े पैदा करता है कि महाभारत भी छोटा पड़ जाए। सब बड़े लोग, सत्ता में आने वाला हर दल, हर नेतृत्व बांध से बंध जाता है। हरेक को नदी जोड़ना एक जरूरी काम लगने लगता है। वह यह भूल जाता है कि प्रकृति जरूरत पड़ने पर नदियां जोड़ती हैं। इसके लिए वह कुछ हजार-लाख बरस तपस्या करती है, तब जाकर गंगा-यमुना इलाहाबाद में मिलती हैं। कृतज्ञ समाज तब उस स्थान को तीर्थ मानता है। मुहाने पर प्रकृति नदी को न जाने कितनी धाराओं में तोड़ भी देती है। बिना तोड़े नदी का संगम, मिलन सागर से हो नहीं सकता।

तो नदी में साफ पानी जगह-जगह बांध, नहर बनाकर निकालते जाएं-सिंचाई, बिजली बनाने और उद्योग चलाने के लिए, विकास करने के लिए। अब बचा पानी तेजी से बढ़ते बड़े शहरों, राजधानियों के लिए बड़ी-बड़ी पाईप लाईन में डालकर चुराते जाएं। यह भी नहीं भूलें कि अभी 30-40 बरस पहले तक इन सभी शहरों में अनगिनत छोटे-बड़े तालाब हुआ करते थे। ये तालाब चौमासे की वर्षा को अपने में संभालते थे और शहरी क्षेत्र की बाढ़ को रोकते थे और वहां का भूजल उठाते थे। यह ऊंचा उठा भूजल फिर आने वाले आठ महीने शहरों की प्यास बुझाता था। अब इन सब जगहों पर जमीन की कीमत आसमान छू रही है। बिल्डर-नेता-अधिकारी मिलजुल कर पूरे देश के सारे तालाब मिटा रहे हैं। महाराष्ट्र में अभी कल तक 50 वर्षों का सबसे बुरा अकाल था और आज उसी महाराष्ट्र के पुणे, मुम्बई में एक ही दिन की वर्षा में बाढ़ आ गयी है। इन्द्र का एक सुन्दर पुराना नाम, एक पर्यायवाची शब्द है पुरंदर-पुरों को, किलों को, शहरों को तोड़ने वाला। यानी यदि हमारे शहर इंद्र से मित्रता कर उसका पानी रोकना नहीं जानते तो फिर वह पानी बाढ़ की तरह हमारे शहरों को नष्ट करेगा ही। यह पानी बह गया तो फिर गर्मी में अकाल भी आयेगा ही।

वापस गंगा लौटें। उत्तराखंड की बाढ़ की, गंगा की बाढ़ की टीवी पर चल रही खबरों को याद करें। नदी के धर्म को भूलकर हमने अपने अहम के प्रदर्शन के लिए बनाए तरह-तरह के भद्दे मंदिर, धर्मशालाएं बनायीं, नदी का धर्म सोचे बिना। इस साल की बाढ़ मूर्तियां-सब कुछ गंगा अपने साथ बहा ले गयी।

तो नदी से सारा पानी विकास के नाम पर निकालते रहें, जमीन की कीमत के नाम पर तालाब मिटाते जाएं और फिर सारे शहरों, खेतों की सारी गंदगी, जहर नदी में मिलाते जाएं और फिर सोचें कि अब कोई नई योजना बनाकर हम नदी भी साफकर लेंगे। नदी ही नहीं बची। गंदा नाला बनी, नदी साफ होने से रही। भरूच में जाकर देखिए रसायन उद्योग विकास के नाम पर नर्मदा को किस तरह बर्बाद किया है। नदियां ऐसे साफ नहीं होंगी। हम हर बार निराश ही होंगे।

तो आशा नहीं बची? नहीं, ऐसा नहीं। आशा है पर तब जब हम फिर से नदी-धर्म ठीक से समझ सकें। विकास की हमारी आज जो इच्छा है उसकी ठीक जांच कर सकें। बिना कटुता के। गंगा को, हिमालय को कोई चुपचाप षड्यंत्र करके नहीं मार रहा। ये तो सब हमारे ही लोग हैं। विकास, जीडीपी, नदी जोड़ो, बड़े बांध सब कुछ हो रहा है— या तो यह पक्ष करता है या तो वह पक्ष। विकास के इस झंडे के तले पक्ष-विपक्ष का भेद समाप्त हो जाता है। मराठी में एक सुंदर कहावत है : रावणा तोंडी रामायण। रावण खुद बखान कर रहा है, रामायण की कथा। हम ऐसे रावण न बनें। ❑

(पिछले दिनों दिल्ली में गंगा पर आयोजित एक सम्मेलन में की गयी बातचीत का एक अंश।)

हिमालय नीति बने

उत्तराखंड में पुनर्वास और बहाली की कवायद के बीच पर्यावरणविद् सुंदरलाल बहुगुणा ने कहा है कि तात्कालिक उपाय करने के बजाय अलग हिमालय नीति बनाकर ही पहाड़ों को भविष्य में भी प्राकृतिक आपदाओं से बचाया जा सकता है। 86 वर्षीय बहुगुणाजी ने कहा कि मैंने अपना पूरा जीवन हिमालय को बचाने की मुहिम में लगा दिया। मैं निराश नहीं हूं बल्कि खुशी है कि मैं लोगों को जागृत कर सका। मैं पुनः मांग करता हूं कि हिमालय के लिए अगल नीति बनायी जाय। हिमालय नीति में स्थायी रोजगार, विनाशकारी पर्यटन पर रोक, पानी के संकट से निपटने के उपाय और हरित पुनर्वास जैसे सभी अहम मसले शामिल किये जायें।

आपने कहा, पहाड़ों पर फलदार और पशुओं को चारा देने वाले पेड़ लगाये जायें। स्थायी रोजगार के उपाय भी जरूरी हैं। पानी के संकट को आने वाले समय में भीषण समस्या बताते हुए कहा कि इससे बचने के लिए अभी से कमर कसनी होगी। आने वाले समय में पानी का संकट बहुत बड़ा होगा। इससे बचने के लिए प्राकृतिक जलाशय बनाये जायें और छोटे-छोटे बांधों के जरिए पानी चोटी तक पहुंचाया जाये ताकि ऊपर से नीचे की ओर पानी का बहाव रहे। बांध बनाना कोई हल नहीं है, बल्कि सर्पाकार गति से बहने वाली नदी को रोककर यह उसके औषधीय गुण खतम कर देते हैं। उत्तराखंड के हरित पुनर्वास की बातें हो रही हैं। लेकिन पेड़ लगाने भर से काम पूरा नहीं हो जाता। उनकी देखरेख भी जरूरी है। **–सुंदरलाल बहुगुणा**

रपट सवाल गरीबी से ज्यादा विषमता का है : राधा भट्ट

जल-जंगल-जमीन स्वराज अभियान का दूसरा चरण सम्पन्न

सर्व सेवा संघ एवं उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित जल-जंगल-जमीन स्वराज अभियान यात्रा का दूसरा चरण 12 जून, 2013 को छरबा, देहरादून से शुरू हुआ। इस अभियान में सुश्री राधाबहन भट्ट, सर्वश्री अमरनाथ भाई, डॉ. सच्चिदानन्द, अशोक भारत, सुरेश भाई, नीमा वैष्णव, बसन्त पाण्डेय, विवेकानन्द माथने, रमेश मुमुक्षु, श्यामसुन्दर आदि यात्री दल में शामिल थे।

उल्लेखनीय है कि स्वराज यात्रा का पहला चरण देहरादून (उत्तराखंड) से राजघाट, नई दिल्ली (20 नवंबर से 9 दिसंबर, 2012) तक सम्पन्न हुआ था।

11 जून को यात्री दल हैस्को, शुक्लापुर, देहरादून में इकट्ठा हुआ। हैस्को यानी हिमालयन पर्यावरणीय अध्ययन एवं संरक्षण संगठन (Himalayan Environmental Studies and Conservation organisation) की स्थापना पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. अनिलप्रकाश जोशी ने की है। वे कई वर्षों से यहां ग्रामीण विकास एवं पर्यावरण विषय पर कार्य कर रहे हैं। यहां पर भाभा परमाणु ऊर्जा अनुसंधान केन्द्र (BARC) मुम्बई का आइसोटोप हाइड्रोलॉजी सेंटर (Isotope Hydrology Centre) भी है, जो सूख गये जलस्रोतों को पुनर्जीवित करने का कार्य कर रहा है। 12 तारीख की सुबह यात्रीदल ने पर्यावरणविद् व वरिष्ठ गांधीवादी श्री सुन्दरलाल बहुगुणा से मुलाकात की। बहुगुणाजी इन दिनों अस्वस्थ हैं और यहां पर (शुक्लापुर) स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। उन्होंने अभियान के लिए शुभकामनाएं दीं।

छरबा से अभियान की शुरुआत : 12 जून, 2013 को छरबा, देहरादून से अभियान की शुरुआत की गयी। देहरादून से 32 किमी दूर विकासनगर के निकट छरबा गांव इन दिनों सूर्खियों में है। उत्तराखंड सरकार ने 17 अप्रैल, 2013 को हिन्दुस्तान कोकाकोला बेवरेज प्रा. लिमिटेड के साथ समझौता किया है। सरकार का दावा है कि कंपनी छरबा में 600 करोड़ रुपये का निवेश करेगी और इससे 1000 लोगों को रोजगार मिलेगा। शीतल नदी के किनारे बसे इस गांव की आबादी 10,046 है। गांव में कुल परिवारों की संख्या 1659 है। इसे अप्रैल, 2012 में केन्द्रीय पंचायतराज मंत्रालय से आदर्श ग्राम पंचायत का पुरस्कार भी मिला है। किसी सरकार ने इस गांव को आदर्श स्थिति तक नहीं पहुंचाया, बल्कि गांव के लोगों की एक पीढ़ी की कड़ी मेहनत से यह स्थिति तैयार हुई है। सरकार कंपनी को 368 बीघा जमीन 19 लाख रुपये प्रति बीघे के हिसाब से संयंत्र स्थापित करने के लिए देगी और प्रतिदिन 6 लाख लीटर पानी उपलब्ध करायेगी।

गांव के लोग सरकार के इस फैसले का विरोध कर रहे हैं। उनका कहना है कि सरकार यह फैसला ग्राम पंचायत की अनुमति लिये बिना किया है। गांव वाले बताते हैं कि 25-30 वर्ष पूर्व गांव में पानी नहीं था। गांव के लोग पलायन कर रहे थे। यहां तक कि लोग अपनी बेटियों की शादी भी इस गांव में नहीं करना चाहते थे। सरकार ने गांव में पानी के लिए कुछ भी नहीं किया। ग्रामीणों ने अपने पराक्रम से यहां वृक्ष लगाये। आज यहां 2 लाख से ज्यादा शीशम, खेर आदि के वृक्ष लगे हैं। गांव के लोगों ने अपनी मेहनत से जंगल खड़ा किया। जंगल के कारण आज गांव में पानी है, अब सरकार पानी का सौदा कर रही है। ग्रामीणों का कहना है कि कोकाकोला प्लांट लगने से गांव में फिर से पानी का संकट उत्पन्न हो जायेगा। कोकाकोला ने जहां-जहां भी अपनी परियोजना स्थापित की है वहां-वहां भयंकर प्रदूषण फैला है। भूगर्भीय जल के अत्यधिक दोहन के कारण उन क्षेत्रों में पानी के लिए हाहाकार मचा है। खेती की जमीन बंजर हुई है। कंपनी द्वारा रोजगार के लिए वादे भी कभी पूरा नहीं हुए हैं। ग्रामीणों का कहना है कि कोकाकोला से समझौता करने से पूर्व सरकार को देश के अन्य भागों में कंपनी द्वारा स्थापित परियोजनाओं का अध्ययन करना चाहिए था। कोकाकोला का प्लांट छरबा गांव में लगने से न केवल वर्षों की मेहनत से पुनर्जीवित जल स्रोत सूख जायेगा और गांव में फिर पानी का संकट उत्पन्न हो जायेगा बल्कि खेती की उपजाऊ भूमि भी बंजर, जहरीली बनेगी। सरकार के इस फैसले से चिन्तित ग्रामीणों ने संकल्प लिया है कि गांव में कोकाकोला का प्लांट नहीं लगने देंगे। जल-जंगल-जमीन स्वराज अभियान ने छरबा के इस आंदोलन के समर्थन में अपनी एकजुटता प्रदर्शित करने के लिए ही अभियान की शुरुआत यहां से की।

12 जून, 2013 को स्वराज यात्रा में शामिल सभी सदस्यों ने छरबा गांव में एक दिन का उपवास रखा। इस अवसर पर आयोजित सभा को संबोधित करती हुईं सर्व सेवा संघ की अध्यक्षा सुश्री राधाबहन भट्ट ने कहा कि हर काम तीर्थस्थल से शुरू करना चाहिए। तीर्थस्थल तो वहीं है, जहां पुण्य का कार्य होता है। पानी बचाना पुण्य का कार्य है। इस समय छरबा गांव तीर्थ-

स्थल बन गया है। इसलिए स्वराज यात्रा भी हम यहीं से शुरू कर रहे हैं। जो अन्याय के खिलाफ लड़ता है वह सैनिक है। आप लोग अन्याय के खिलाफ लड़ रहे हैं इसलिए आप सभी सैनिक हैं। इस आंदोलन को अहिंसक बनाये रखना जरूरी है। ग्रामसभा ही विधानसभा बनाती है, इसलिए ग्रामसभा ही मुख्य है। ग्रामसभा को नजरअंदाज कर कोई फैसला करना ठीक नहीं है। यह सिर्फ छरबा गांव की मुसीबत नहीं है, हर जगह ऐसी परिस्थिति है। इसलिए हम मिलजुल कर ही इसका मुकाबला कर सकते हैं। इस आंदोलन से दूसरे गांव को भी जोड़ना चाहिए। आंदोलन में महिलाओं को भी शामिल करना चाहिए। उत्तराखंड में जितने आंदोलन हुए हैं; चाहे वह शराबबंदी का आंदोलन हो या चिपको आंदोलन, सभी में महिलाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं।

सर्व सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष अमरनाथ भाई ने कहा कि हमारे लिए जल जीवन है और उनके लिए संसाधन। प्राकृतिक संसाधन जीविका के आधार हैं, व्यापार की वस्तु नहीं। पहले गांव या सरकार! सरकार जनता के वोट से बनती है, जनता के नोट से चलती है। विकास के नाम पर लोगों को रौंदा जा रहा है। यह विकास है या विनाश! विकास वस्तुओं का हो रहा है, व्यक्तियों का नहीं। उन्होंने उड़ीसा के तीन सफल आंदोलनों चिलिका, गंधमार्दन तथा वलियापाल का उल्लेख किया। उन्होंने आंदोलन को शांतिमय ढंग से चलाने की अपील की। सभा को अभियान के संयोजक अशोक भारत, उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष सुरेश भाई, विवेकानंद माथने, डॉ. सच्चिदानन्द, रूमीराम जसवाल, ग्रामप्रधान छरबा, विजय जड़धारी, पर्यावरणविद् कमला पंत, उत्तराखंड महिला मंच, मोहन सिंह रावत, पूर्व मंत्री सुन्दर थापा, प्रधान, सेसपुर आदि ने भी संबोधित किया। उपवास समाप्ति के बाद लोगों ने वृक्षों में रक्षा सूत्र बांधे।

13 जून को देहरादून में पत्रकार वार्ता हुई, जिसे राधाभट्ट, अमरनाथ भाई, अशोक भारत, सुरेश भाई आदि ने संबोधित किया। पत्रकार वार्ता के बाद देहरादून के सर्वोदय कार्यकर्ताओं के साथ बैठक हुई, जिसमें देहरादून सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष बीजू नेगी, जनकवि अतुल शर्मा सहित लगभग 20-25 लोग शामिल रहे। देहरादून से यात्री दल हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया।

13 जून, 2013 को यात्री दल शाम 4 बजे मातृ सदन, हरिद्वार पहुंचा। स्वामी सानन्द (प्रो.जी.डी. अग्रवाल) का गंगा के निर्मल व अविरल प्रवाह के लिए अनिश्चितकालीन उपवास आज से शुरू हुआ। आज स्वामी निगमानंद की पुण्यतिथि भी थी। स्वामी निगमानन्द ने खनन माफिया के खिलाफ संघर्ष में अपने जीवन का बलिदान दिया। हरिद्वार से 14 तारीख की सुबह रूद्रपुर के लिए निकले। उत्तराखंड सर्वोदय मंडल जनपद उधमसिंह नगर ने यात्रियों का स्वागत रूद्रपुर में किया। देवनाथ वर्मा की अध्यक्षता में सभा हुई। यहां पर अमरनाथ भाई ने कहा कि समस्या सिर्फ जमीन की नहीं है। प्रश्न यह है कि दुनिया बचेगी कि नहीं। अमर्यादित लोभ एवं भोग के कारण यह स्थिति बनी है। विकास के नाम पर जमीन को बंजर बना दिया। पहाड़ खोद डाला, नदियों को नाला, गटर बना दिया। जब तक हमारी जीवन-शैली और विकास का मॉडल नहीं बदलेगा तब तक पर्यावरण संकट का कोई समाधान नहीं है। राधाभट्ट ने कहा कि यह यात्रा स्वराज की कोशिश है। देश को स्वराज नहीं मिला, आजादी मिली है अंग्रेजों से। देश दूसरी दिशा में भटक गया। जो अर्थनीति आज तक चली पश्चिमी देशों में उसको प्रगति और अपने यहां विकास कहते हैं। प्राकृतिक संसाधन जिसे आप बिक्री लायक समझ रहे हैं, ये सब हमारी विरासत हैं, बिक्रय की वस्तु नहीं। यह जमीन, पानी, पेड़-पौधे उपभोग की वस्तु नहीं, आजीविका के साधन हैं। जिन्होंने जंगलों को बेरहमी से काटा, वे इससे पैसा कमाना चाहते हैं। जल, जंगल, जमीन, जिसमें खनिज भी शामिल है; का सामुदायिक प्रबंधन गांव के हाथों में होना चाहिए, इसकी एक मुहिम चलानी चाहिए। यह सत्याग्रह भी है और रचना भी। विवेकानन्द माथने ने कहा कि विश्व बैंक एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्था/एजेंसियां सरकारों पर पानी के निजीकरण के लिए दबाव बनाती हैं। विश्वबैंक एवं गैट्स समझौते के दबाव में सरकार पानी के व्यवसायीकरण का मन बना चुकी है। राष्ट्रीय जलनीति 2012 के मसौदे से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

सभा को अशोक भारत, सुरेश भाई, जगत सिंह परिहार, विजय कु. श्रीवास्तव, प्रमोद शर्मा, चन्द्रशेखर आदि ने संबोधित किया। यहां से यात्रा दल दो भागों में विभक्त हो गया। एक टोली में अमरनाथ भाई, डॉ. सच्चिदानन्द, विवेकानन्द माथने, बसन्त पाण्डेय, रमेश मुमुक्षु आदि शामिल थे, जो दन्या, पिथौरागढ़, धरमधर, बागेश्वर होते हुए कौसानी पहुंची। दूसरी टोली में राधाभट्ट, नीमा वैष्णव, अशोक भारत, सुरेश भाई, श्यामसुन्दर आदि शामिल थे; जो मवाली, अल्मोड़ा, बसौली, गरुड़ होते हुए कौसानी पहुंची। कौसानी में दोनों दल फिर एक साथ मिले।

15 जून को हलद्वानी में पत्रकार वार्ता हुई, जिसे राधाभट्ट, अशोक भारत, सुरेश भाई आदि ने संबोधित किया। शाम में मवाली में एक विचार गोष्ठी हुई, जिसका आयोजन तरुण जोश एवं साथियों ने किया। यहां संस्कृत विद्यालय के एक ऐसे छात्र से भी मुलाकात हुई, जिसने 51000 वृक्ष

लगाने का संकल्प लिया है। रात्रि विश्राम मवाली में ही था। मवाली में गोष्ठी के दौरान ही वर्षा प्रारम्भ हो गयी जो 17 जून तक लगातार जारी रही, जिससे उत्तराखंड के जानमाल को भारी नुकसान पहुंचा है। मवाली से 16 जून की सुबह अल्मोड़ा के लिए निकले।

अल्मोड़ा में शमशेर सिंह विष्ठ एवं उनके साथियों से मुलाकात हुई। यहां पर पत्रकार वार्ता का आयोजन विष्ठजी ने किया था। पत्रकार वार्ता में शमशेर सिंह विष्ठ, राधाभट्ट, सुरेश भाई एवं अशोक भारत ने भाग लिया। पत्रकार वार्ता के उपरांत यात्री दल बसौली पहुंचा। यहां पर सभा का आयोजन ईश्वर जोशी ने किया था। ईश्वर जोशी इस क्षेत्र में कई वर्षों से सक्रिय हैं। पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण आदि क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। लगातार बारिश के बावजूद बैठक में अच्छी संख्या में लोग शामिल हुए। बैठक के बाद यात्री दल गरुर के लिए प्रस्थान किया। गरुर में सदन मिश्र ने यात्री दल का स्वागत किया। सदन मिश्र वरिष्ठ सर्वोदय कार्यकर्ता हैं। इस समय क्षेत्र में जल-जंगल-जमीन के लिए कार्य कर रहे हैं। 17 जून को भारी वर्षा के बीच 11 बजे से बैठक शुरू हुई, जिसे राधाभट्ट, सुरेश भाई, अशोक भारत, गोपाल भट्ट, नन्दनसिंह नेगी, गिरीश तिवारी, भुवन पाठक आदि ने संबोधित किया। लगातार हो रही बारिश के कारण 4 बजे से निर्धारित कार्यक्रम नहीं हो सका। शाम में यात्री दल लक्ष्मी आश्रम, कौसानी पहुंचा। 18 तारीख को वर्षा के कारण स्कूल बंद थे, इसलिए पूर्व निर्धारित स्कूलों का कार्यक्रम नहीं हो सका। दोपहर में लक्ष्मी आश्रम में कार्यक्रम हुआ, जिसे अशोक भारत ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि जिस स्वराज में हर चीज के लिए हम सरकार एवं बाजार के मोहताज हों, वह स्वराज किस काम का। सरकार एवं बाजार के मेल ने आम आदमी की जिन्दगी को पटरी से उतार दिया है। समाज में टूटन, घुटन एवं परावलंबन बढ़ रहा है। बाजारवादी अर्थव्यवस्था में जीवन के मूल आधार जल-जंगल-जमीन-खनिज-पहाड़ आदि कुदरत की अनमोल उपहारों पर बड़ी-बड़ी देशी-विदेशी कंपनियों का कब्जा हो रहा है। शाम में दूसरी टोली भी पहुंच गयी। अमरनाथ भाई ने शाम की प्रार्थना सभा में अभियान के बारे में विस्तार से बताया।

19 जून को सोमेश्वर में अंतिम सभा हुई। अमरनाथ भाई ने कहा कि हालत कैसे बदले, इसपर सोचने की जरूरत है। अच्छा समाज कैसे बने यह चिन्तनीय विषय है। गांव में ग्रामभावना विकसित करना चाहिए। जल, जंगल, जमीन गांव के अधीन होना चाहिए। हमें चार बातें करनी चाहिए। खुद समझें और समझाएं। ग्रामसभा को मजबूत करें। अपनी ताकत से कोई अच्छा काम शुरू करें और यह संकल्प लें कि गलत करेंगे नहीं और गलत सहेंगे भी नहीं। राधाभट्ट ने कहा कि यह स्वराज के लिए अभियान है। सर्व सेवा संघ ग्राम स्वराज के लिए पहल कर रहा है। अगर गांव के लोग अपनी प्राकृतिक विरासतों के साथ जुड़ाव महसूस करें तो कोई जमीन नहीं बेचेगा। यह प्रवाह के विरुद्ध चलने का काम है। सारी विरासतें गांव की हैं, उन्हीं को हासिल करना है। मुख्य ताकत लोकशक्ति है। सवाल गरीबी का उतना नहीं जितना विषमता का है। जल, जंगल, जमीन गांव के लोगों के हाथ में रहे तो लोग गरीबी खुद मिटा लेंगे। उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष सुरेशभाई तथा लक्ष्मी आश्रम, कौसानी ने अभियान के सफल आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। अभियान का अगला चरण बिहार, झारखंड, बंगाल, उड़ीसा में होगा, इस घोषणा के साथ स्वराज यात्रा का दूसरा चरण पूरा हुआ। **–अशोक भारत**

नशामुक्ति योजना का क्रियान्वयन

जिला सर्वोदय मंडल, पानीपत पिछले कई वर्षों से हर माह की पांच तारीख को मासिक बैठक करता चला आ रहा है। जुलाई, 2013 की बैठक स्वाध्याय आश्रम, पट्टीकल्याणा में सम्पन्न हुई। एजेण्डे पर चर्चा करते हुए तय हुआ कि सभी प्रकार के नशों ने लोगों का और खासकर हमारी युवा पीढ़ी का जीवन खोखला कर दिया है। सभा में सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि 'नशामुक्ति अभियान' की शुरुआत आश्रम के अपने गांव पट्टीकल्याणा से की जाय।

14 जुलाई, 2013 को पट्टीकल्याणा की ग्रामपंचायत, ग्रामसभा के अन्य प्रमुख जागरूक नागरिकों और गांव के महिला मंडल की बहनों की अलग-अलग बैठकें सफलता-पूर्वक हुईं। नशाबन्दी-अभियान को हर प्रकार का सहयोग देना मान्य किया।

पट्टीकल्याणा के सफल प्रयोग के साथ इस अभियान को समालखा विधानसभा क्षेत्र के गांव-गांव तक 2014 के विधानसभा और लोकसभा चुनाव से पहले पूरा करने का हर सम्भव प्रयत्न करेंगे।

ग्राम पंचायतों, महिला मंडलों, धार्मिक व सामाजिक संगठनों, शैक्षणिक संस्थाओं, जागरूक युवाओं, नागरिकों और मीडिया के बंधुओं से अपील की गयी कि इस कार्यक्रम में सहयोग देकर आने वाले चुनावों में हर प्रकार का लालच त्याग कर उसी उम्मीदवार का समर्थन करें जो नशामुक्ति अभियान का समर्थन करे और इस अभियान में पूरा सहयोग करे। **–महावीर त्यागी,**

महामंत्री, अखिल भारतीय नशाबंदी परिषद

कविता

शांति-यज्ञ

–योगेश समदर्शी

पहाड़ पर पहाड़ सा दुःख
आ पड़ा अचानक/
अचानक सारी सुन्दरता/
सारा रोमांच/
सारी मौज/
सारी मस्ती/
पहाड़ों पर,
छुट्टी बिताने की/
सब तमन्नाएं।
जैसी खीज उठीं/
पहाड़ चीख उठा।

गहरी वादियां,
शोर करने लगीं/
जिन बादलों में घूमना/
जिन बादलों को महसूस करना,
सुहाता था/
जिसके लिए हर शख्स,
गर्मियों में पहाड़ पर/
सुख से जीने जाता था।
उसी पहाड़ ने सुख,
शांति और शुकून/
छीन लिया।

लील गया अपने आगोश में
न जाने कितने प्राण।
प्रलय की पीड़ा/
ने तांडव किया।

धर्म ग्रंथ कहते हैं।
पहाड़ों पर देव रहते हैं।
देवता वास करते हैं।
साधना करते हैं ऋषि/
तपते हैं तपस्वी/
पवित्र धाम होते होंगे पहाड़?
तभी तो होती होगी वहां पर साधना।

पर मौज, मस्ती, काम/
क्रोध, मद्य पान,
और मौज की/
कई दूकान।
इन्हीं पहाड़ों में
हो गयी हैं विकसित।
कहीं इसी का प्रतिशोध
तो नहीं लिया/
पर्वत ने।
कहीं गुस्से की अभिव्यक्ति तो नहीं था
यह प्रलय का लीला।

जब हम मनुष्यों ने
रोक दिए हैं नदियों के रास्ते/
काट कर पेड़, बना कर पैसे,
पहाड़ को किया गंजा/
हमने पहाड़ से उसकी सम्पदा
निरंतर छीनी है।
हमने उसकी सुन्दरता को/
अपनी ऐश का सामान बनाया है।
हमने ही/
पहाड़ की शांति को,
किया था भंग।
शायद पहाड़/
हो गया हो तंग।
इसलिए भड़का होगा,
गुस्सा पहाड़ का।

चीख कर, चिल्ला कर/
खोली होगी आँख प्रकृति ने/
दी हो जैसे चेतावनी/
हम सब को।
संभल जाओ/
रुक जाओ।
मत छेड़ो शांत दिखने वाली/
इस विशाल पाषाण शिला को।
मत रोको नदियों के वेग को।
जियो और जीने दो वाली/
सब बातें जरूरी हैं।
यह प्रलय तो जैसे/
पहाड़ की भी मजबूरी है।

हो जाने पर शांत
रोया होगा पर्वत/
बिलखी होगी गंगा।
शोक मनाया होगा/
जंगल के हर जीव ने।
क्योंकि विनाश के/
पक्ष में प्रकृति कभी नहीं रही/
वह तो जीवन देने वाली है।

अवशेष कहानी कह रहे हैं/
अशेष जीवन की पीड़ा,
शेष जीवित सह रहे हैं।
हाथ मिला कर,
हौसले से/
उठ खड़े होने का वक्त है/
शायद यह वक्त कुछ सिखाना चाहता है/
उसे शब्दशः समझने की जरूरत है/
यही भविष्य की शांति यज्ञ का।
शुभ महूरत है।

❑ एफ-116, द्वितीय तल, वैशाली, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश), मो.9717044408

❑

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) अशोक भारत (प्रकाशक), सुरभि प्रिन्टर्स, इंडियन प्रेस कॉलोनी, मलदहिया वाराणसी से मुद्रित तथा सर्व सेवा संघ-परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001, फोन एवं फैक्स नं. 0542-2440385 से प्रकाशित। संपादक : बिमल कुमार। छपी प्रतियाँ : 1600